पब्लिशर
श्री निजबोध
शिवानन्द पब्लिकेशन लीग,
आनन्द कुटीर,
ऋषिकेश।

मुद्रक
बाबू गोपालदास ठकराल
मरकनटाईल प्रेस, चैम्बरलैन रोड.
लाहौर।

प्यारे साधक ! मैं आपकी सेवा करने, आपकी सहायता करने, आपको सुखी बनाने, आपकी अविद्या और अज्ञान को दूर कर आपको जीवन के अन्तिम लक्ष्य कैवल्य, परमपद-तक पहुंचाने के लिये सर्वदा उद्यत रहता हूं।

—शिवानन्द।

प्रस्तावना

आपको आध्यात्मिक सहायता अनेकों उपायों से मिला करती है। अधिक अंश में गुरु आपकी बहुत सहायता करता है। उसके उपदेश के अनुसार आपको साधन करना चाहिये। गुरु कृपा के बिना आप आध्यात्मिक पथ में उन्नति नहीं कर सकते। किन्तु साधक अन्य अनेक उपायों से भी बहुत सहायता प्राप्त करता है यथा आत्मदर्शी महात्माओं द्वारा लिखित पुस्तकों से, उनके वचनों से, उनके जीवन कथाओं से, महात्माओं के सत्संग से अनेक धर्मग्रंथों से और पुराणों इतिहासों से। जीवन में अपने अनुभवों से भी आपको अनेक शिक्षायें मिलती है। इन सब में महापुरुषों की जीवनी, उनकी साधना का वर्णन, कैसे उन्होंने काम-क्रोध-लोभादि पर विजय पाई उनके विशेष गुण, उनके जीवन के नियम और साधन ये सब आपकी आध्यात्मिक साधना में अधिक सहायक होंगे। उनका नाम स्मरण करने ही से आपको महान् शक्ति और बल मिलता है। उनके जीवन में आप कुछ घटनायें ऐसी याद रखोगे जो आपके चरित्र और व्यवहार को बिल्कुल बदल देंगी। कभी २ सत्संग अथवा उपदेश में महात्माओं द्वारा सुनाए हुए दृष्टांत से भी जीवन में कठिनाइयां पड़ने पर आपकी आंख खुल जायेगी। इसलिये प्रत्येक साधक का यह परम कर्तव्य है कि प्रतिदिन

प्रातःकाल देवताओं, महात्माओं, पैगम्बरों और आत्मदर्शी महात्माओं का स्मरण करे और उनका आशीर्वाद प्राप्त करे।

इस पुस्तक में साधक के दैनिक जीवन में उपयोगी अनेकों आध्यात्मिक साधनों का सार संगीत रूप में दिया गया है। अन्त में संकीर्तन ध्वनियों का भी अच्छा संग्रह दिया गया है। गायन रूप में दार्शनिक तत्वों को बताना अधिक आकर्षक और रुचिकर होता है। है। साधारण मनुष्य को शुष्क शास्त्रीय सिद्धान्त मधुर सुरीली तान में गाकर सुनाए हुए अच्छी प्रकार समझ में आते हैं। गायन और संकीर्तन के द्वारा वह आत्मा के संगीत में लीन हो जाता है। पूर्वकाल के ऋषियों ने अपनी श्रेष्ठ रचनाएं पद्य अथवा संगीत रूप में लिखी हैं। रामायण, महाभारत, भागवत और दूसरे धर्मग्रंथ पद्यात्मक हैं। उन्हें अच्छी प्रकार गाया भी जा सकता है। भजन, दोहे और पद्यों को याद कर लेना सुगम होता है। आप इन भजनों को अपने ढङ्ग से गा सकते हो। आपको इनकी विशेष राग रागनी की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।

इस पुस्तक में प्रकाशित भजनों और संकीर्तनों में से बहुत से भजन पूज्यपाद श्री स्वामी शिवानन्द जी अपने संकीर्तन पर्यटन में गाया करते थे। आपकी स्वर लहरी बड़ी मधुर और सुरीली होने से आप सर्वदा अपने श्रोताओं के हृदयों को मन्त्रमुग्ध बना देते हैं। आप अपने कीर्तन में भाषा की ओर विशेष ध्यान न देकर अंग्रेजी, हिन्दी और संस्कृत के मिले जुले भजनों में दार्शनिक सिद्धान्तों, साधन

सम्बन्धी उपदेशों, भक्ति और वैराग्य सम्बन्धी तत्वों को श्रोताओं को सरलता से समझाने में विशेष प्रयत्न करते हैं। और इसी कारण आपकी शिष्यमंडली और अभिभावक वर्ग आपके श्रीमुख से इन भजनों और उपदेशों को सुनने के लिये सदा लालायित रहते हैं।

श्री स्वामी जी के इन कीर्तनों और भजनों का प्रकाशन यद्यपि ंश रूप में यथा समय होता रहा था किन्तु अंग्रेजी में पुस्तकाकार ां इनका प्रकाशन सन् १९४३ में हुआ। तब से ही आपके शिष्यों की ाह अभिलाषा रही कि यदि यही भजन और कीर्तन हिन्दी भाषा में ी प्रकाशित कर दिये जावें तो जनता को विशेष लाभ पहुंचेगा। अस्तु! इन भजनों की हिन्दी प्रतिलिपि करने की चेष्टा आरम्भ की गई। श्री स्वामी जी के हृदय के उद्गार, उनका अगाध ज्ञान, सरल और सुबोधन उपदेश शैली और दार्शनिक शब्दों तथा दृष्टान्तों का चुनाव ये सब आपके भजनों को विशेष महत्व देते हैं। और उनका भाषान्तर कर देना किसी भी अनुवादक के लिये सुगम कार्य नहीं है इसी कारण सम्भव है कि हिन्दी भाषा की प्रस्तुत पुस्तक में भी भजनों का भाषान्तर इतना रोचक ना रहा हो जितना कि स्वामी जी महाराज का अंग्रेजं भजन होता है तो भी उनमें बताये हुए उपदेश इतने उपादेय औः महत्व पूर्ण हैं कि उन्हें हिन्दी प्रेमी जनता के सामने रखने में ह अत्यन्तहर्ष और गर्व होता है। जिन सज्जनों ने एक दो बार श्री स्वामी जी के श्रीमुख से इन भजनों को सुना है उनके लिये इनव गाना कठिन नहीं होगा। श्री स्वामी जी महाराज के कुछ कीर्तनों

रिकार्ड भी तैयार हो चुके हैं और उनकी सहायता से भी इन भजनों को गाना सुगम हो जावेगा।

यदि इस पुस्तक में से आप थोड़े से भी भजन याद करलो और जब कभी अवकाश मिलने पर उन्हें गाया करो तो आपको बड़ा लाभ प्राप्त होगा। इनसे आपको स्मरण रहेगा कि आपको क्या क्या साधना करनी है और आप में उनमें से किस किस साधना में त्रुटि है। जब कभी आप निष्ठा की कमी, आलस्य अथवा अवकाश नहीं मिलने के कारण अपने दैनिक साधन में प्रमाद करोगे तो ये भजन आपको अपने कर्तव्य का स्मरण करावेंगे। हरएक भजन के साथ भगवान के नाम भी जुड़े हुए हैं इस लिये उनका गाना भी एक प्रकार का साधन ही होगा।

भगवान करे आप इन भजनों और कीर्तनों के गायन से परमात्मा के प्रेम में मग्न होकर भक्ति रस का दिव्य सुधा पान करो और इसी जन्म में भगवत्प्राप्ति रूप मोक्ष को पाओ।

शिवानन्द पब्लिकेशन लीग
आनन्द कुटीर, ऋषिकेश।

दिव्यजीवन भजनावली

प्रथम परिच्छेद

स्तुति ध्वनियाँ

१. प्रार्थना

जय गणेश जय गणेश जय गणेश पाहिमाम्

श्री गणेश श्री गणेश श्री गणेश रक्षमाम् ।

जय सरस्वती जय सरस्वती जय सरस्वती प

श्री सरस्वती श्री सरस्वती श्री सरस्वती रक्षमा

राजराजेश्वरी राजराजेश्वरी राजराजेश्वरी प

त्रिपुरसुन्दरी त्रिपुरसुन्दरी त्रिपुरसुन्दरी रक्ष

शरवणभव शरवणभव शरवणभव पाहिमाम्

सुब्रह्मण्य सुब्रह्मण्य सुब्रह्मण्य रक्षमाम्

वेलमुरुह वेलमुरुह वेलमुरुह पाहिमाम्

वेलायुध वेलायुध वेलायुध रक्षमाम्

---

२. गुरु प्रार्थना

श्री व्यास भगवान् व्यास भगवान् व्यास भगवान् पाहिमाम्
श्री बादरायण बादरायण बादरायण रक्षमाम्
श्री शङ्कराचार्य शङ्कराचार्य शङ्कराचार्य पाहिमाम्

---

३. गुरु शरणम्

श्री शङ्कराचार्य शरणम् शरणं श्री व्यास भगवान्
श्री दत्तात्रेय शरणम् शरणं श्री राधेकृष्ण
श्री सीताराम शरणम् शरणं श्री हनुमन्त

---

४. गुरु वन्दना

श्री व्यास भगवान् नमोऽस्तुते जय विष्णु अवतार नमोऽस्तुते
श्री बादरायण नमोऽस्तुते जय कृष्णद्वैपायन नमोऽस्तुते
श्री शंकराचार्य नमोऽस्तुते जय जगत् गुरो नमोऽस्तुते
श्री अद्वैताचार्य नमोऽस्तुते जय शङ्कर अवतार नमोऽस्तुते
श्री दत्तात्रेय नमोऽस्तुते जय श्री अवधूत गुरु नमोऽस्तुते
श्री गुरु देवदत्त नमोऽस्तुते जय त्रिमूर्ति अवतार नमोऽस्तुते

जय गुरु शिव गुरु हरि गुरु राम
जगद्गुरु परम गुरु सद्गुरु श्याम

५. स्तुति ध्वनि

राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम
श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम
श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम
राम राम राम राम सीताराम
श्याम श्याम श्याम श्याम राधेश्याम

बं बं बं बं बं बं बं
बं बं बं बं बं बं बं
बं बं बं बं महादेव
बं बं बं बं सदाशिव

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ शक्ति ॐ शक्ति पराशक्ति
आदि शक्ति शिव महाशक्ति
गणेशवरद गजानन
लम्बोदर जय विनायक
सुब्रह्मण्य वेलायुध
शरवणभव हरोहर

६. सुब्रह्मण्य ध्वनि

ॐ शरवण भवने हरोहर
ॐ शिव सुब्रह्मण्य हरोहर
ॐ स्कन्दम् वन्दे हरोहर
ॐ षण्मुख नाथ हरोहर

हरोहर हरोहर हरोहर हरोहर

ॐ वेल मुरुह हरोहर
ॐ वेलायुध हरोहर
ॐ वल्लीवल्लभ हरोहर
ॐ मुरुह गुहने हरोहर

हरोहर हरोहर हरोहर हरोहर

ॐ कार्ति केय हरोहर
ॐ कातिरकाम वास हरोहर
ॐ कुमरेश हरोहर
ॐ उडुप्पीनाथ हरोहर

हरोहर हरोहर हरोहर हरोहर

ॐ दण्डा युध पाणि हरोहर
ॐ तिरुप्परन्कुन्द्र हरोहर
ॐ तिरुवन्नमलइ हरोहर
ॐ पलनि आण्डव हरोहर
ॐ आदिनाथ हरोहर
ॐ आदिमूल हरोहर
ॐ आदिदेव हरोहर
ॐ देवदेव हरोहर
ॐ आरुमुह हरोहर
ॐ दैवानैसमेत हरोहर
ॐ अनाथरक्षक हरोहर
ॐ अधम उद्धार हरोहर

हरोहर हरोहर हरोहर हरोहर

स्तुति ध्वनियां

ॐ दीनबन्धु हरोहर
ॐ दीननाथ हरोहर
ॐ देवनाथ हरोहर
ॐ भक्तवत्सल हरोहर
ॐ पतित पावन हरोहर
ॐ प्रेम प्रकाश हरोहर

हरोहर हरोहर हरोहर हरोहर

आओ आओ भगवन् हरोहर
मुझ को दो दर्शन हरोहर
मुझे सिखाओ हरोहर
रक्षा करो मेरी हरोहर
बुद्धि ज्ञान दो हरोहर
दया करो मुझ पे हरोहर
मुझे शुद्ध करो हरोहर
प्रकाश दो मुझे हरोहर
प्रचोदयात् हरोहर
पाहिमाम् त्राहिमाम् हरोहर
त्राहिमाम् रक्षमाम् हरोहर

हरोहर हरोहर हरोहर हरोहर

७. कीर्तन नारायणं भजे

ायणं भजे नारायणं भजे नारायणं भजे नारायणम्
ाम रामरामराम रामराम रामरामराम रामराम रा

कृष्ण हरि रामकृष्ण हरि रामकृष्ण हरि राम राम

राधाकृष्ण हरि राधाकृष्ण हरि राधाकृष्ण हरि श्याम श्याम श्याम
शम्भो सदाशिव शम्भो सदाशिव शम्भो सदाशिव बं बं बं
शम्भो शङ्कर हर शम्भो शङ्कर हर शम्भो शङ्कर हर महादेव
गौरी शङ्कर हर गौरी शङ्कर हर गौरी शङ्कर हर सदाशिव
राजराजेश्वरी राजराजेश्वरी राजराजेश्वरी महेश्वरी
आदिशक्ति शिव विष्णुशक्ति हरि ब्रह्मशक्ति महा सरस्वती

निर्गुण

ॐॐॐॐॐ ॐॐॐॐॐ ॐॐॐॐॐ ॐॐॐ
ॐ सोऽहं शिवोऽहम् सोऽहं शिवोऽहम् सोऽहं शिवोऽहम् शिवोऽहम्
सोऽहं शिवोऽहम् अहं ब्रह्मास्मि, सच्चिदानन्द (स्वरूप) ब्रह्मोऽहम्
आत्मब्रह्मस्वरूप चैतन्यपुरुष तेजोमय आनन्द तत्वमसि लक्ष्य
सत्यं शिवं शुभम् सुन्दरं कान्तम् सच्चिदानन्द सम्पूर्ण सुख शान्तम्
प्रज्ञानंब्रह्म अहंब्रह्मास्मि तत्वमसि अयमात्मा ब्रह्म
ॐॐॐॐॐ ॐॐॐॐॐ ॐॐॐॐॐ ॐॐॐ
नारायणं भजे नारायणं भजे नारायणं भजे नारायणम्

---

८. सर्व देव स्तुति

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते कृष्णदेवाय
ॐ नमो भगवते श्रीरामाय
ॐ नमो भगवते सीतारामाय
ॐ नमो भगवते शरवणभवाय

स्तुति ध्वनियां

ॐ नमो भगवते सुब्रह्मण्याय
ॐ नमो भगवते कार्तिकेयाय
ॐ नमो भगवते गुह मुरुहाय
ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय
ॐ नमो भगवते हनुमंताय
ॐ नमो भगवते दत्तात्रेयाय
ॐ नमो भगवते सद्गुरुनाथाय
ॐ नमो भगवते त्रिमूर्त्यवताराय
ॐ नमो भगवते अनुसूया पुत्राय

ॐॐॐॐ ॐविचार ॐॐॐॐ भजो ॐकार

भक्त वत्सल सीताराम — अधम उधारक राधेश्य
करुणा सागर सीताराम — कृपानिधान राधेश्याम
आपत् बांधव सीताराम — अनाथ रक्षक राधेश्याम
दीनबन्धु सीताराम — दीननाथ राधेश्याम
जगत्पति सीताराम — जगन्नाथ राधेश्याम
पुरुषोत्तम सीताराम — परमेश्वर राधेश्याम
अयोध्याचन्द्र सीताराम — वृन्दावन चन्द्र राधेश्याम
आदि गुरु सीताराम — जगत्गुरु राधेश्याम
आदि देव सीताराम — देवदेव राधेश्याम
सच्चिदानन्द सदाशिव — परब्रह्म महादेव
सदानन्द सदाशिव — परमानन्द महादेव
कैलासपति सदाशिव — वैकुण्ठपति नारायण
राजराजेश्वरी भुवनेश्वरी — त्रिपुर सुन्दरी महेश्वरी

ॐ शक्ति ॐ शक्ति पराशक्ति — आदि शक्ति शिवा महाश

वरद गजानन लम्बोदर जय विनायक
य वेलायुध शरवणभव हरोहर

---

६. दत्तात्रेय स्तुतिः

त्तात्रेय तवशरणं दत्तनाथ तवशरणम्
त्रिगुणात्मक त्रिगुणातीत त्रिभुवनपालक तव शरणम्
श्वतमूर्ते तव शरणं श्यामसुन्दर तव शरणम्
षाभरण शेषभूषण शेषशायी तव शरणम्
षड्भुजमूर्ते तवशरणं षड्भुज यतिवर तवशरणम्
दण्डकमण्डलु गदापद्म शङ्खचक्रधर तवशरणम्
करुणानिधे तवशरणं करुणा सागर तवशरणम्
कृष्णासङ्गमी तवशरणं भक्तवत्सल तवशरणम्
श्रीगुरुनाथ तवशरणं सद्गुरुनाथ तवशरणम्
श्रीपाद श्रीवल्लभ गुरुवर नृसिंह सरस्वती तवशरणम्
कृपामूर्ते तवशरणं कृपा सागर तवशरणम्
कृपाकटाक्ष कृपावलोकन कृपानिधे तवशरणम्
कालनाथ तवशरणं कालनाशन तवशरणम्
पूर्णानन्द पूर्णपरेश पुराणपुरुष तवशरणम्
जगदीश्वर तवशरणं जगन्नाथ तवशरणम्
जगत्पालक जगदाधीश जगदाधार तवशरणम्
अखिलान्तक तवशरणं अखिलैश्वर्य तवशरणम्
भक्तजन प्रिय भवभयनाशन प्रसन्नवदन तवशरणम्
दिगम्बर तवशरणं दीनदयाघन तवशरणम्
दीननाथ दीनदयालु दीनोद्धार तवशरणम्

स्तुति ध्वनियां

तपोमूर्ते तवशरणं तेजोराशे तवशरणम्
विश्वात्मक तवशरणं विश्वरक्षक तवशरणम्
विश्वंम्भर विश्वजीवन विश्व परात्पर तवशरणम्
विघ्नान्तक तवशरणं विघ्ननाशन तवशरणम्
ब्रह्मानन्द ब्रह्मसनातन ब्रह्ममोहन तवशरणम्
प्रेमवतीत प्रेमवर्धन प्रकाशमूर्ते तवशरणम्
निजानन्द तवशरणं निजपददायक तवशरणम्
नित्य निरंजन निराकार निराधार तवशरणम्
चिद्घन मूर्ते तवशरणं चिदाकार तवशरणम
चिदात्मरूप चिदानन्द चित्सुखानन्द तवशरणम्
अनादिमूर्ते तवशरणं अखिलवतार तवशरणम्
अनन्तकोटिब्रह्माण्ड नायक अघटितघटना तवशरणम्
भक्तोद्धार तवशरणं भक्तरक्षक तवशरणम्
भक्तानुग्रह भक्तजनप्रिय पतितोद्धार तवशरणम्

ॐ

द्वितीय परिच्छेद

भक्ति साधना

१. भक्ति और वैराग्य का गीत

जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्री राधे
जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण जय कृष्ण जय श्री कृष्ण
जय सीते जय सीते सीते जय सीते जय श्री सीते
जय राम जय राम राम जय राम जय श्री राम
जय शम्भो जय शम्भो शम्भो जय शंकर कैलासपति
जय गौरी जय गौरी गौरी जय शक्ति जय पार्वती

यह दुनिया दो दिन का मेला
(असार क्षण भंगुर स्वप्नवत)
यह जीवन दो क्षण का खेल है
आत्म प्राप्ति का करो यतन

जय राधे जय राधे राधे......

मंसूर, शम्स तबरेज ने
शंकर और वामदेव ने

मदालसा, मैत्रेयी ने
चूड़ाला और सुलभा ने
सब ने पाया था आत्मज्ञान

जय राधे जय राधे राधे.......

जैसे नदी में हो लकड़ी के लट्ठे
मिलते और जुदा होते
ऐसे ही इस दुनियां में
पुत्र-पिता का होता संयोग
सुत दारा धन मोह तजो प्यारे

जय राधे जय राधे राधे......

दुनियां है यह मन का खेल
शब्द जाल है, मोह माया का
सारे नाते हैं जग के झूठे

जय राधे जय राधे राधे.......

ब्रह्म सत्यम् जगन्मिथ्या
जीवो ब्रह्मैव केवलम्

जय राधे जय राधे राधे......

जो है प्रभु की अनन्य भक्ति
करते यदि पूरा आत्म निवेदन
कहते जो एक बार, सच्चे हृदय से
तेरा हूं मैं, प्रभु हो तेरी इच्छा
पाओगे दर्शन प्रभु का इसी का क्षण

जय राधे जय राधे राधे......

———

२. प्रेम गीत

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ सोऽहं शिवोऽहम् सोऽहं शिवोऽहम् सोऽहं शिवोऽहम्

प्रेम दिव्य है प्रेम है अनुराग प्रेम सुधा है

ये शुद्ध करता है उद्धार करता है उन्नत करता है

हृदय के कुञ्जमे बढ़ाओ शुद्ध प्रेम, ईश्वर प्रेम है

अन्तरा

नित्य करो जप नाम सुमरन ईशध्यान और संकीर्तन

भक्तों की सेवा करो सत्संग आत्म निवेदन बनो विनीत

विश्वास धरो भगवान नाम में करुणा और कृपा मे उनकी

जैसे रुई को आग जलावे भगवन्नाम जलावे पाप

मैल स्वर्ण का सुनार जैसे मन का मैल हटावो आप

बढ़े विरह बहें प्रेम को आंसू मिलेगा अब तुम को प्यारा

श्रद्धा भक्ति प्रेमहीन जीवन है फीका, मौत समान

---

३. नवधा भक्ति

राम हरे सिया राम राम
राम हरे सिया राम राम
राम हरे सिया राम राम
राम हरे सिया राम राम

भक्ति साधना

कृष्ण हरि राधेश्याम श्याम
कृष्ण हरि राधेश्याम श्याम
कृष्ण हरि राधेश्याम श्याम
कृष्ण हरि राधेश्याम श्याम

भक्तों के चार भेद हैं
आर्त जिज्ञासु अर्थार्थी
ज्ञानी बुद्धि और ज्ञानवाला
इन में ज्ञानी उत्तम है।

भक्ति के नौ प्रकार हैं
श्रवण कीर्तन स्मरण
पादसेवन अर्चन वन्दन
दास्य सख्य आत्म निवेदन

गोविन्द राम गोपाल राम
जानकीराम कौसल्या राम
सर्वज्ञ राम आनन्द राम
दयालु राम प्रियवर राम

प्यारे को जीत सकते नहीं, मधुर मुस्काने से
जिसने भी उसको जीता है, प्रेम के आंसुओं से
हरि हरि रटे नहीं धिक्कार जिव्हा को बारबार
दर्शन किया नहीं श्याम का पापिनी वो आंख है
जल भरा सरोवरो में नदियों में और सब कहीं
स्वाति की बूंद के लिये रहती है प्यासी चकोरी

विषय भोग तुच्छ हैं सच्चे भक्त के लिये
आनन्द है वह देखता चरणों में श्री राम के

राम राम राम सियावर राम

---

५. नाम महिमा

सीताराम सीताराम सीताराम बोल
राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम बोल

नाम प्रभु का है सुखकारी
पाप कटेंगे क्षण में भारी
पाप की गठड़ी दे तू खोल

सीताराम ......

प्रभु का नाम अहिल्या तारी
भक्त भीलनी हो गई प्यारी

नाम की महिमा है अनमोल

सीताराम……

सुआ पढ़ावत गणिका तारी
बड़े बड़े निशिचर संहारी
गिन गिन पापी तारे तोल

सीताराम……

जो जो शरण पड़े प्रभु तारे
भव सागर से पार उतारे
बन्दे तेरा क्या लगता मोल

सीताराम……

राम भजन बिन मुक्ति ना होवे
मोती सा जनम तू व्यर्थ खोवे
राम रसामृत पीले घोल

सीताराम……

चक्रधारी भज हर गोविन्दम्
मुक्ति दायक परमानन्दम्
हरदम कृष्ण तराजू तोल

सीताराम……

———

गोविन्द राम गोपाल राम
जानकीराम कौसल्या राम
सर्वज्ञ राम आनन्द राम
दयालु राम प्रियवर राम

प्यारे को जीत सकते नहीं, मधुर मुस्कानो से
जिसने भी उसको जीता है, प्रेम के आंसुओं से
हरि हरि रटे नहीं धिक्कार जिव्हा को बारबार
दर्शन किया नहीं श्याम का पापिनी वो आंख है
जल भरा सरोवरो में नदियों में और सब कहीं
स्वाति की बूंद के लिये रहती है प्यासी चकोरी

विषय भोग तुच्छ हैं सच्चे भक्त के लिये
आनन्द है वह देवव्रता चरणों में श्री राम के

राम राम राम सियावर राम

---

५. नाम महिमा

सीताराम सीताराम सीताराम बोल
राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम बोल

नाम प्रभु का है सुखकारी
पाप कटेंगे क्षण में भारी
पाप की गठड़ी दे तू खोल

सीताराम ......

प्रभु का नाम अहिल्या तारी
भक्त भीलनी हो गई प्यारी

नाम की महिमा है अनमोल

सीताराम......

सुआ पढ़ावत गणिका तारी
बड़े बड़े निशिचर संहारी
गिन गिन पापी तारे तोल

सीताराम......

जो जो शरण पड़े प्रभु तारे
भव सागर से पार उतारे
बन्दे तेरा क्या लगता मोल

सीताराम......

राम भजन बिन मुक्ति ना होवे
मोती सा जनम तू व्यर्थ खोवे
राम रसामृत पीले घोल

सीताराम......

चक्रधारी भज हर गोविन्दम्
मुक्ति दायक परमानन्दम्
हरदम कृष्ण तराजू तोल

सीताराम......

---

६. प्रेम गीत

राम राम सीताराम रा—म
राम राम सीताराम राम राम राम राम
राम नाम के साधन से, अपना मन शुद्ध करो

अन्तरा

अपना मन शुद्ध करो ब्रह्मचर्य जल से
राम राम राम राम
अपना मन शुद्ध करो दिव्य प्रेम के आंसू से
प्रेम प्रेम प्रेम प्रेम

प्रभु के चरण धोओ पछतावे के आंसू से

अन्तरा

धोओ उनके चरणों को प्रेम के आंसू से
प्रेम प्रेम प्रेम प्रेम
धोओ प्रभु के चरण विरह के आंसू से
प्रेम प्रेम प्रेम प्रेम
धोओ उनके चरणों को निज हृदय मन्दिर में
राम राम राम राम
राम राम सीता राम

---

७. अभ्यास गीत

हरि हरि बोल बोल हरि बोल
मुकुन्द माधव गोविन्द बोल

हरि हरि बोल बोल हरि बोल
वाहे गुरु बोल सत् नाम बोल

जैसे दही पापड़ अचार चटनी
खिलाते जिह्वा को ज्याद: खिचड़ी
वैसी ही जप कीर्तन सत्संग स्वाध्याय
जल्दी बढ़ाते हैं प्रेम भक्ति

हरि हरि बोल……

अभ्यास करो यम नियम, आसन प्राणायाम का
प्रत्याहार, धारणा ध्यान समाधि का
करो श्रवण कीर्तन स्मरण पादसेवन अर्चन
वन्दन दास्य सख्य आत्मनिवेदन

हरि हरि बोल……

रखो विवेक वैराग शम दम तितिक्षा
उपरति श्रद्धा समाधान मुमुक्षत्व
सदा करो श्रवण मनन निदिध्यासन
मिलेगा जल्दी तुम को आत्म साक्षात्कार

हरि हरि बोल……

सत्यम ज्ञानम् अनन्तम् ब्रह्म
शान्तम अजरम् अमृतम् अभयम्

हरि हरि बोल……

८. नन्दलाल गीत

मेरी आंखों में बसो मेरे नन्दलाल
मेरे नन्द लाल मेरे प्यारे लाल
मेरे हृदय में बसो मेरे नन्दलाल

राम राम हरि सीताराम
सीता सीताराम राधे राधेश्याम
हरि सीताराम हरि राधेश्याम
लक्ष्मी नारायण श्रीमन्नारायण
हरि ॐनारायण बद्री नारायण
शम्भो शङ्कर नमःशिवाय

मेरी आंखों में बसो ......

जगाओ प्रेम जोत अपने हृदय में
बांधो सारे जीवों को निज प्रेम पाश में
बढ़ाओ विश्व प्रेम बहाओ प्रेम के आंसू

मेरी आंखों में बसो........

सोऽहं सोऽहं शिवोहम् - शिवोऽहम् शिवोऽहम्
रूपों के मोहकारी दीर्घ स्वप्न से जागो
झूठे नाम रूपों की ममता को छोड़ो
करो आत्मा से प्रेम - रहो आत्मा में

मेरी आंखों में बसो.......

निज अन्तरात्मा के गौरव को तो समझो
अहंकार को मारो और रागद्वेष को

करो नाश कपट का और कुटिलाई का
सोऽहम् सोऽहम् शिवोऽहम्—शिवोऽहम् शिवोऽहम्

---

६. राम की व्यापकता का गीत

[तर्ज—सुनाजा सुनाजा सुनाजा कृष्ण]

ॐ श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम

पृथ्वी जल अग्नि वायु और आकाश में हैं राम
हृदय मन में प्राणों में और इन्द्रियों में राम ॥
स्वास रक्त में नाड़ियों में और मस्तक में हैं राम
भाव और विचार में शब्द और कर्म में राम

ॐ श्री राम.......

अन्दर राम बाहर राम सामने हैं राम
ऊपर राम नीचे राम और पीछे हैं राम
दाहिने और बाएं हैं राम सब जगह में राम
व्यापक राम विभु राम, पूर्ण हैं राम

ॐ श्री राम.......

सत् हैं राम चित् हैं राम आनन्द हैं राम
शान्ति राम शक्ति राम ज्योति हैं राम
प्रेम है राम दया है राम सौन्दर्य राम

आनन्द हैं राम सुख हैं राम शुद्धता हैं राम
आश्रय, शान्ति, मार्ग, प्रभु और साक्षी हैं राम
माता, पिता, मित्र बन्धु गुरु हैं राम
सब का सहारा, केन्द्र, लक्ष्य, और ध्येय हैं राम
कर्ता, हर्ता पालनकर्ता, रक्षक, हैं राम

ॐ श्री राम……

एक और अनेक का परम धाम हैं राम
शुद्ध प्रेम और पूजा से मिलता है राम
आत्म समर्पण भक्ति से मिलता है राम
जप कीर्तन और प्रार्थना से मिलता है राम

ॐ श्री राम जय राम……

जय राम जय राम जय जय राम
नमामि राम भजामि राम वन्दे राम,

ॐ श्री राम जय राम जय जय राम

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

---

१०. पारसी कीर्तन

येजदान हरवेशपतवान् हरवेशपाग: परवरा वरून पिरोजूगर
खुदावन्द अहरमज्द रैयोमन्द खोरेमन्द दावर वोख्तार

खुदावन्द अहरमज़्द रैयोमन्द खोरेमन्द खावर दावर
न्यायकारी मोक्षदाता ज्योतिर्मय प्रकाशवान्

दयामय सृष्टिकर्ता

परम ज्ञान, विश्वपति, विजेता जीवन दाता
त्राता पापों से, सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान्

धारणकर्ता रक्षक

ॐ

तृतीय परिच्छेद

भक्त के भजन

१. बंशी वाले का गीत

राम हरे सिया राम राम
राम हरे सिया राम राम
कृष्ण हरे राधे श्याम श्याम
कृष्ण हरे राधे श्याम श्याम

राम हरे सिया राम राम
राम हरे सिया राम राम
कृष्ण हरे राधे श्याम श्याम
कृष्ण हरे राधे श्याम श्याम

गौरी गौरी गंगे राजेश्वरी
गौरी गौरी गंगे महेश्वरी
गौरी गौरी गंगे महाकाली
गौरी गौरी गंगे पार्वती

गौरी गौरी गंगे भुवनेश्वरी
गौरी गौरी गंगे मातेश्वरी
गौरी गौरी गंगे महालक्ष्मी
गौरी गौरी गंगे सरस्वती

श्री गोकुल का रहने वाला
माखन मिश्री खाने वाला
आत्म निवेदन पूर्ण करो
ये ही सच्चा है कल्याण पथ

जय जय जय नन्द लाला
मोहन मुरली बंसी वाला
ईश्वर कृपा हो प्राप्त तुम्हें
तुम को मिलेगा परम आनन्द

---

२. भक्त का गीत

घुपति राघव राजा राम
पतित पावन सीता राम

भक्तों के प्यारे सीता राम हे रामा.......
पतित पावन राधेश्याम हे श्यामा.......

दया के सागर सीता राम
दया निधान राधेश्याम

आपत बांधव सीताराम
अनाथ रक्षक राधेश्याम

हे विश्वनाथ सीताराम
हे सर्वेश्वर राधेश्याम

हे पुरुषोत्तम सीताराम
हे परमेश्वर राधे श्याम

हे जगत् गुरु सीताराम
हे देवेश्वर राधेश्याम
हे कैलासपति सदाशिव
हे वैकुण्ठनाथ नारायण

आहिमाम् प्रचोदयात् सीताराम
तवैवाहं सर्वतव राधेश्याम

दिव्य चक्षु दो सीताराम
देखूं स्वरूप तेरा राधेश्याम
मुझे पवित्र करो सीताराम
ज्योति दो मुझ को राधेश्याम

मुझ को लय होने दो सीताराम
अपने स्वरूप में राधेश्याम

---

३. विश्वनाथ गीत

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय
ॐ नमः शिवाय शम्भो शम्भो शम्भो शम्भो
शंकर शंकर शंकर शंकर

शंकर महादेव शम्भो सदाशिव
शंकर महादेव शंकर शंकर शंकर शंकर

हरि ॐ नारायण ॐ नमो नारायणाय
हरि ॐ नारायण हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम

श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम
श्याम श्याम

श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम
श्याम श्याम श्याम श्याम

राधे राधे राधे	राधे राधे राधे
राधे राधे राधे	राधे राधे
	राधे राधे

हे मेरे स्वामी विश्वनाथ	अन्तर्यामी सारे जीवों के
पार्वती प्रिय वल्लभ	जय जय शिव जय जय शिव
दिव्य ज्योति आप हो	स्वयं प्रकाश आप हो
सत्य को प्राप्त करूं मैं	जय जय शिव जय जय शिव
योगियों के नाथ, हे !	करुणा पूर्ण हे प्रभु !
परम गुरु आप हो	जय जय शिव जय जय शिव
तुम को प्रणाम करता हूं	आप ही मेरे शरण हो
मेरे तो रक्षक आप हो	जय जय शिव जय जय शिव
मदनदहन हे शिव	अनन्त सुख दायक
मेरे त्राता आप हो	जय जय शिव जय जय शिव
ईश्वरों के ईश हे !	सब सुरों के देव हे !
स्वामियों के नाथ हे !	जय जय शिव जय जय शिव
हे गंगाधर	चन्द्रशेखर
हर हर महादेव	शम्भो शम्भो शम्भो शम्भो
	शंकर शंकर शंकर शंकर
नील लोहित	उमाशंकर
गौरी सदा शिव	शम्भो शम्भो शम्भो शम्भो

---

४. प्रार्थना गीत

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे

शंकर शंकर शंकर शंकर शंकर शंकर शंकर शंकर शंकर शंकर

वं वं वं वं वं वं हर हर बं बं बं बं बं बं हर हर

हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ हरि हरि हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ हरि हरि

सत्संगत्वे निःसंगत्वं निःसंगत्वे निर्मोहत्वं

निर्मोहत्वे निश्चल चित्तं निश्चल चित्ते जीवन्मुक्ति

आओ प्यारे भगवन् आओ

भव सागर से हमें बचाओ

अन्तरा

प्रेम और दया के सागर क्या आप नहीं हो ?

क्या आपने बचाया न था ध्रुव प्रहलाद को ?

ज्योति नहीं क्या आपकी हृदयों में चमकती ?

कांति नहीं क्या आपकी नयनों में दमकती ?

खिलते हुए मुख मंडलों में आप ही तो हो।

धड़कन में दिलों की नहीं क्या आप धड़कते

नयनों में स्वांस बन के मेरे क्या नहीं रमते

डोलायमान मन के क्या साक्षी नहीं हो ?

तो फिर हे प्रभु भरो हृदय में प्रेम प्रेम प्रेम ॥

गाता नहीं क्या नाम तुम्हारा मैं राम राम
रटता नहीं क्या नाम तुम्हारा मैं ॐ ॐ
हरएक छिन में जीवन के करता हूं तेरा काम
सर्वत्र तेरी सत्ता को क्या मानता नहीं
वृक्षों में फूलों पत्ती में पत्थर और कुरसी में
पशु पक्षी में सूरज चांद और तारों में
तो फिर हे प्रभु भरो हृदय में प्रेम प्रेम प्रेम

---

५. वन्दना गीत

रामा रामा रामा रामा रामा रामा रामा रामा रामा
रामा रामा जय जय रा
रामा रामा सीता रामा
रामा रामा रामा रामा रामा रामा रामा सीता रामा

भक्तों के घट में वासी जो
जिसने लङ्कापति मारा
झूठे फल शबरी के खाए
करता उस प्रभु को वन्दन ॥१॥

जो बसता वृन्दावन धाम में
दुष्ट कंस जिसने मारा
जिसने खाए सुदामा तन्दुल
करता उस प्रभु को वन्दन ॥२॥

जो बसता कैलास शिखर में
कहलाता जो त्रिपुरारी
जिसने पिया हलाहल प्याला
करता उस प्रभु को वन्दन ॥३॥

जिसने अन्नजन भाग मिलाया
चार भाग निर्योजन से
जुदा करीं जिसने ऋतुएं सब
करता उस प्रभु को वन्दन ॥४॥

---

६. बंसुरी का गीत

बंसुरी बंसुरी बंसुरी श्याम की
बंसुरी बंसुरी बंसुरी श्याम की
दिल चुरा लेगई बंसुरी श्याम की

हे राम हे राम हे राम हे राम
हे राम हे राम हे राम हे राम
हे श्याम हे श्याम हे श्याम हे श्याम
हे श्याम हे श्याम हे श्याम हे श्याम

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम
श्याम श्याम श्याम

श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम
श्याम श्याम श्याम

हरि बोल हरि बोल हरि बोल हरि बोल
हरि बोल हरि बोल हरि बोल हरि बोल

हे प्रभु हे प्रभु हे प्रभु हे प्रभु
हे प्रभु हे प्रभु हे प्रभु हे प्रभु

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

मेरे मन को मोह लिया बंशी ने तेरी
सुध मुझको ना रही निज देह को मन की

हे प्रभु दो दर्शन हे प्रभु दो दर्शन
हे प्रभु दो दर्शन हे प्रभु दो दर्शन

मैं तेरा सब तेरा मैं तेरा सब तेरा
मैं तेरा सब तेरा मैं तेरा सब तेरा
संसार है मिथ्या इक भगवान है सच्चा
संसार है मिथ्या इक भगवान है सच्चा
करो ध्यान का अभ्यास पाओ परमानन्द
करो ध्यान का अभ्यास पाओ परमानन्द

[illegible]

७. वंसुरी वाले का गीत

दर्शन दीजिये—

वंसुरी वाले दर्शन दीजिये
श्याम सुन्दर प्यारे दर्शन दीजिये
मन मोहन प्यारे दर्शन दीजिये

वंसुरी वाले वंसुरी वाले
मोर मुकट वाले वंसुरी वाले

संसार की अग्नि मुझ को तपा रही
अमृत सुधा बरसा के मुझे तृप्त कीजिये

मैं जानता हूं—

वासना क्षय मनोनाश तत्व ज्ञान से मोक्ष हो
अपनी कृपा से ये सब मुझ को दीजिये

---

८. पीड़ा का गीत

जय जय श्री सीताराम — श्री हरे राम
रघुपति राघव — जानकी राम
जय जय श्री सीता राम

दुःख संसार के सहन ना होवें — परीक्षा मेरी अधिक करो ना
कृपा की वृष्टि करो तो मुझ पे — शरण तिहारी में आ पड़ा हूं॥

दयासिंधु आपने थे खाये शबरी के फल
अब मेरी बेर देरी काहे आइये प्रभु आइये

तड़प रहा हूं तेरे दरश को, इतनी निठुराई मत करो
तुम तो भक्त वत्सल हो पतित पावन आप हो
जटायु लिया निज गोद में, अपनी जटाओं से पोंछा
कितने दयालु आप हो, क्यों मुझ को भूले बैठे हो
अभियोग है मेरा आप पर क्यों पक्षपात करते हो
नहीं स्वभाव ये आपका अपना मुझे जवाब दो।
जय जय श्री सीताराम.......

---

६. सुब्रह्मण्य का गीत

मेरा प्रणाम तुम को हे सुब्रह्मण्य
मेरा प्रणाम.......

शंकर के सुत दैवानई के प्यारे
शूर विनाशक पलनी नाथ
मेरा प्रणाम......

ज्योतियों के ज्योति मेरे आनन्द
हे मम जीवन मेरे शरण
हृदय निवासी सुब्रह्मण्य
मेरा प्रणाम तुम को......

हे प्रिय मधुर अमृतमय
मेरे आनन्द मेरी शान्ति
सर्वभूतात्मा सुब्रह्मण्य
मेरा प्रणाम

दिव्य ज्योति आप हो ज्ञान ज्योति भी
सागर महान हो लहरें भी आप ही
जीवों के अन्तर्यामी सुब्रह्मण्य
मेरा प्रणाम

मैं तुम्हारी शरण हूं त्राहिमाम् पाहिमाम्
अखिल विश्व आत्मा सुब्रह्मण्य
मेरा प्रणाम...

---

१०. विरह का गीत

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचरा प्राणाः शरीरं गृहम्
पूजातेविषयोपभोगरचना निद्रा समाधि स्थितिः
संचारः पदयोः प्रदक्षिणाविधिः स्तोत्राणि सर्वाः गिरो
यद्यत् कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

कब तुम से मिलूंगा, हे प्रभु ! नयना तरसते दरश को
इतने कठोर क्यों हुए सोता नहीं मैं रात भर

विरह की अग्नि जलाती मुझे मैं तो तिहारी शरण हूं
आपके प्रेमबाण ने बींध दिया ये दिल मेरा

कोशिश हजार मैं करूं रुकती नहीं आंसू धारा
नदियां बहाती आंख है कपड़े भिगोती है मेरे

खुश होता हूं तेरी याद में, सुख मिलता तेरे गुण गान में
इन आंसुओं में शांति मिले, आनन्द तेरे नाम में।

हरे राम हरे राम.......

बसो मम नयनों में कृष्ण ! विराजो मेरे हृदय में श्याम
अपनी बंसी सुनादो मुझे, हे स्वामी वृन्दावन के

भूख रही ना नींद मुझे, व्याकुल रहता है मन मेरा
तकता हूं राह सारी रात दरशन की तेरे राधे गोविन्द

हरे राम हरे राम......

निर्गुण

सोहम सोहम सोहम   सोहम् शिवोऽहम
तू है मुसाफिर जगत में   मुक्ति तेरा अधिकार है
"मैं कौन हूं" विचार करो, आपको जानो और मुक्त हो
अखण्ड अद्वैत वस्तु सच्चिदानन्द ब्रह्मन्

तत् त्वम् असि—वो ही तुम हो, इसको समझ के मुक्त हो
ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापर:
उठाओ ब्रह्माकार वृत्ति अपने स्वरूप में स्थित रहो।

---

११. पाण्डुरंग का गीत

जय जय विट्ठल पाण्डुरङ्ग जय हरि विट्ठल पाण्डुरङ्ग
जगन्निवास पाण्डुरङ्ग जगत्पति पाण्डुरङ्ग
सर्वान्तर्यामी पाण्डुरङ्ग सर्वान्तरात्मा पाण्डुरङ्ग
व्यापकविभु पाण्डुरङ्ग विमल अमल पाण्डुरङ्ग
अनादि अनन्त पाण्डुरङ्ग अजर अविनाशी पाण्डुरङ्ग
नाम तेरा नौका पाण्डुरङ्ग संसार तरने को पाण्डुरङ्ग
नाम तेरा शस्त्र है पाण्डुरङ्ग मन राक्षस के नाश को पाण्डुरङ्ग
तुझ कृपा को तरसता हूं पाण्डुरङ्ग तेरी दया का प्यासा पाण्डुरङ्ग
अपना रूप प्रकट करो पाण्डुरङ्ग मुझ को दिखाओ पाण्डुरङ्ग
लगा रहे मन मेरा पाण्डुरङ्ग तेरा चरण कमल में पाण्डुरङ्ग
लगाऊं शरीर को पाण्डुरङ्ग सदा तेरी सेवा में पाण्डुरङ्ग
ये ही विनय तेरी पाण्डुरङ्ग मुझे मत भूलो पाण्डुरङ्ग
सब कुछ तुम्हीं हो पाण्डुरङ्ग कर्ता धर्ता हो पाण्डुरङ्ग
न्यायकारी हो पाण्डुरङ्ग धर्म तुम्हीं हो पाण्डुरङ्ग
मेरे शरण तुम हो पाण्डुरङ्ग पिता गुरु हो पाण्डुरङ्ग

तुम्हीं मेरे प्राण हो, पाण्डुरङ्ग तुम्हीं मेरी आत्मा हो, पाण्डुरङ्ग
पाण्डुरङ्ग पाण्डुरङ्ग पाण्डुरङ्ग पाण्डुरङ्ग
प्रत्यक् चेतन पाण्डुरङ्ग परमार्थ तत्व पाण्डुरङ्ग

---

१२. शरणागति का गीत

राम राम सीता राम हे सिया राम
राम.........राम

सच्चिदानन्द ब्रह्मने अनन्त ज्योतिये
चिदानन्द राम ब्रह्मने शान्ति स्वरूपने
सत्यम् अद्वैत वस्तुवे ज्ञान स्वरूपने
राम.........राम

मेरे प्रभु ! मुझे मोक्ष दो
कर्मों की शुद्धि के लिये
मेरे प्रभु ! मुझे मोक्ष दो
क्लेशों से छुटकारा हो
मेरे प्रभु ! मुझे भक्ति दो
दर्शन पाऊं मैं आपका
मैं तेरा, सब कुछ तेरा प्रभु !
तेरी इच्छा पूर्ण हो।
राम......राम

१३. प्रार्थना का गीत

हे कृष्ण आजा बंसी बजाजा
हे कृष्ण आजा गीता सुनाजा
हे कृष्ण आजा माखन खाजा
हे कृष्ण आजा लीला दिखाजा

---

१४. कन्हैया का गीत

आओ आओ मेरे प्यारे कृष्ण कन्हाई
मैं तेरी खातिर हृदय के अन्दर कुटिया बनाई

अन्तराई

तेरे लिये प्यारे मैं काग उड़ाऊं
मिश्री मक्खन देकर मैं तुम को रिझाऊं
इतनी देरी इतनी देरी तुम ने क्यों लगाई
मैं तेरी खातिर हृदय के अन्दर कुटिया बनाई
हर रोज़ तेरी याद में आंसू बहाऊं
घर में आओ प्यारे मैं आरती फिराऊं
दूर दूर रहते क्यों तुम कृष्ण कन्हाई
मैं तेरी खातिर हृदय के अन्दर कुटिया बनाई !

---

१५. श्याम मुरारी का गीत

आओ इधर मेरे प्यारे श्याम मुरारी
अपनी प्यारी बंसी बजाओ कुञ्ज विहारी

अन्तरा

गोपियां खड़ी हैं तेरी राह में प्यारे
लिये दूध दही माखन करें तुम को इशारे
क्या डरते हो उनसे, रहे क्यों भाग दूर दूर
क्या उनकी प्यारी चीज कोई तुम ने चुराली

आओ इधर मेरे प्यारे श्याम मुर
अपनी प्यारी बंसी बजाओ कुञ्ज विह

आओ निकट कृष्ण कन्हैया इधर आओ
इन गोपियों के सिर से मटकी उतरवाओ
वे ग्वाल बाल श्याम ! तुम्हारे किधर गये
इमदाद गोपियों की करो, उनको बुलाओ
आओ निकट, पास आओ चोर मुरारी
खाओ दही, बंसी बजा के नाचो, विहारी !

आओ इधर मेरे प्यारे श्याम मुर
अपनी प्यारी बंसी बजाओ कुञ्ज विह

———

१६. आरती का गीत

जय जय आरती वेणु गोपाल
वेणु गोपाल वेणु लोल
पाप विदूर नवनीत चोर
जय जय आरती.......

जय जय आरती वेङ्कट रमण
वेङ्कट रमण संकट हरण
सीताराम राधेश्याम
जय जय आरती..........

जय जय आरती गौरी मनोहर
गौरी मनोहर भवानी शंकर
साम्ब सदाशिव उमा महेश्वर
जय जय आरती...........

जय जय आरती राज राजेश्वरी
राज राजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी
महा सरस्वती महा लक्ष्मी
महाकाली महा शक्ति
जय जय आरती वेणु गोपाल

१७. मंगल आरती

मंगलम् मंगलम् मंगलम् जय मंगलम्
मंगलम् मंगलम् मंगलम् जय मंगलम्
सीता राम राधेश्याम
नमः शिवाय नमो नारायणाय
मंगलम्......

पार्वती सरस्वती
राजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी
मंगलम्..........

शंकरादि वासुदेव देव मंगलम्
सुब्रह्मण्य गणेशादि देव मंगलम्
सीताराम राधेश्याम देव मंगलम्
दत्तात्रेय नारायण देव मंगलम्
सद्गुरु परमगुरु देव मंगलम्
मंगलम्..........

आदि शक्ति परा शक्ति देवी मंगलम्
राजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी देवी मंगलम्
पार्वती सरस्वती देवी मंगलम्
महालक्ष्मी महाकाली देवी मंगलम्
मंगलम्........

———

१८. मंगल आरती

श्री रामचन्द्र रुकु जय मंगलम्
नल्ल दिव्य मुख सुन्दिरकुं शुभ मंगलम्

अन्तरा

माराभि रामानुकुम् मन्नु परं धामनुकुम्
डरारु कैयननुकुम् रविकुल शोमनुकुम्
श्रीराम चन्द्ररुकु जय मंगलम्

ॐ

चतुर्थ परिच्छेद

क्रियात्मक साधन

१. शिक्षा का गीत

मोहन बंसी वाले तुम को लाखों प्रणाम
तुमको लाखों प्रणाम

शंकर भोले भाले तुम को लाखों प्रणाम
तुम को लाखों प्रणाम प्यारे किरोड़ों प्रणा

भजो राधेगोविन्द
राधेगोविन्द भजो राधेगोविन्द
राधेगोविन्द भजो सीता गोविन्द
हरि बोलो बोलो भाई राधे गोविन्द

हरे कृष्ण हरे राम राधे गोविन्द
ब्रह्म मुहूर्त में उठो प्रातः चार बजे
प्रातः उठकर नित्य जपो राम राम राम
चार बजे जागो करो ब्रह्म विचार
चार बजे जागो करो 'मैं कौन हूं' विचार
चार बजे जागो करो योगाभ्यास
दो घण्टे का प्रतिदिन मौनव्रत रखो
एकादशी उपवास करो खाओ फल और दूध
एक अध्याय गीता का करो रोज स्वाध्याय
दान करो नियम पूर्वक आय का दशांश
स्वावलम्बन ग्रहण करो सेवक को त्यागो
रात्रि में कीर्तन करो और सत्संग
वीर्य रक्षा नित्य करो सदा सच बोलो
सत्यं वद धर्मंचर पालो ब्रह्मचर्य
अहिंसा परमो धर्मः सब से प्रेम करो
नहीं दुखाओ चित्त किसी का बनो दयावान
क्रोध को क्षमा से जीतो बढ़ाओ विश्व प्रेम
यदि चाहो जल्दी उन्नति कसा लिखो डायरि
हरे कृष्ण हरे राम राधे गोविन्द

२. साधना सप्ताह का गीत

राम भजो राम भजो राम भजो जी

राम कृष्ण गोविन्द गोपाल भजो जी

'क्रिस्मस' में तुम आये हो करने कठिन साधन

मत करो ध्यान तुम साग भाजी और गरम पकौड़े

साधन 'वीक' में आये हो तुम करने योगाभ्यास

मत करो ध्यान तुम दूध फलों और भाव दही का

ऋषिकेश में आये हो तुम करने योगाभ्यास

मत करो ध्यान तुम फुल्के चपाती चटनी पिरौंठे का

वोही विषय सेवन करते क्या लज्जा नहीं आती

सीखो पाठ तुम इसका पशु पक्षियों की सृष्टि से

बहुत हुआ बस बन्द करो अब बहुत खाना और पी

आंख खोल के जाग उठो, अब सोते मत रहो

बहुत हो चुका बन्द करो अब व्यर्थ की गपशप

नावेल समाचार पत्रों को पढ़ना बन्द करो।

मीटिंग और क्लास में पहुंचो नियत समय पर अ

समय का पालन देगा सफलता और समृद्धि भी

शीघ्र बीतता जाता समय अब पलपल है अनमोल

हर छिन का उपयोग करो आध्यात्मिक साधन में

चिन्ता मत करो अच्छे भोजन और देह के सुखों की
उठो और शीघ्र लगो जप कीर्तन ध्यान में
सुक्खा रुक्खा थोड़ा खाके आसन में बैठो
हरि स्मरण करो हरि जपो और हरि का ध्यान धरो
चेष्टा करके योग मार्ग में सीढ़ी सीढ़ी चढ़ो
जल्दी निर्विकल्प समाधि शिखर पे पहुंचोगे ।
यही लक्ष्य आदर्श यही है केन्द्र तुम्हारा
तुम को मिलेगा शाश्वत सुख और शान्ति ॥

इस वर्ष अनेको गऊएं मर गई दूध नहीं मिलता
गंगा जलका पान करो आनन्द से रहो
आवश्यकता पड़ने से जीवन बनाओ प्राकृतिक
विना दूध की चाय पियो आनन्द से रहो
आटा दाल भी मिलता नहीं, खाने का है 'कन्ट्रोल'
सारी भोजन सामिग्री के दाम चढ़े भारी
सारे देश में भारी विपत्ति छाई हुई है आज
आओ मिलकर करें प्रार्थना विश्व शान्ति की
ॐ तत्सत् ॐ तत्सत् ॐ तत्सत् ॐ
ॐ शान्ति ॐ शान्ति ॐ शान्ति ॐ
हरि ॐ तत्सत् श्री ॐ तत्सत् शिव ॐ तत्सत् ॐ

---

३. साधना गीत

सीताराम सीताराम सीताराम बोल
राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम बोल

मन को स्थिरकर प्रभु को लगाना ये है साधना
देती मोक्ष आनन्द शान्ति और अमरता
धीरज से मित्रों करो परिश्रम किसान की भांति
अपने दैनिक साधन में दृढ़ता से रहो लगे

सीताराम सीताराम......

तन्द्रा आलस और मन मोदक नष्ट करो भाई
सूक्ष्म भोजन करो रात में भगादो निन्द्रा को
जप कीर्तन और ध्यान में तुम रहो नियमवर्ती
आवश्यक है नियमपूर्वक साधनका करना

सीताराम सीताराम.....

जैसे मूञ्ज से करते दूर हो उसका सार भाग
पंच कोशों से ऐसे ही तुम करो पृथक आत्मा
शान्ति प्रसन्नता सन्तुष्टि और निर्भयता
सूचित करते गति तुम्हारी आत्म मार्ग में

सीताराम सीताराम.....

---

४. गोविन्द गीत

राम कृष्ण गोविन्द
राधा कृष्ण गोविन्द
गोपाल कृष्ण गोविन्द
कृष्ण कृष्ण गोविन्द
गोविन्द गोविन्द गोविन्द गोविन्द

बांके विहारी गोविन्द
वृज विहारी गोविन्द
श्याम विहारी गोविन्द
कुञ्ज विहारी गोविन्द
कृष्ण मुरारी गोविन्द
अवध बिहारी गोविन्द
गोविन्द गोविन्द गोविन्द गोविन्द

गं गणपति गोविन्द
वं महादेव गोविन्द
क्लीं कृष्ण गोविन्द
रां राम गोविन्द
हुं हनुमन्त गोविन्द
ऐं सरस्वती गोविन्द

दुं दुर्गा	गोविन्द
क्रीं काली	गोविन्द
ह्रीं माया	गोविन्द
श्रीं, लक्ष्मी	गोविन्द
० ०	०
भगवान सत्य है	गोविन्द
भगवान है आनन्द	गोविन्द
भगवान शान्ति है	गोविन्द
भगवान ज्ञान है	गोविन्द
भगवान प्रेम है	गोविन्द
भगवान ज्योति है	गोविन्द
० ०	०
संयम करो मन का	गोविन्द
संयम इन्द्रियों का	गोविन्द
करो आत्म दर्शन	गोविन्द
यही है शिक्षा	गोविन्द
सारे वेदों की	गोविन्द
सारे शास्त्रों की	गोविन्द
० ०	०
जीवन का लक्ष्य है	गोविन्द
भगवत्प्राप्ति	गोविन्द
इसे कभी ना भूलो	गोविन्द
इसे प्राप्त करो	गोविन्द
श्रद्धा भक्ति से	गोविन्द

ध्यान के द्वारा　　गोविन्द
श्रवण और मनन से　　गोविन्द
तप योग के द्वारा　　गोविन्द
मन्त्र लेख से　　गोविन्द
लिखित जप से　　गोविन्द
निष्काम सेवा　　गोविन्द
विवेक विचार से　　गोविन्द
अहिंसा वर्तो　　गोविन्द
सत्य बोलो　　गोविन्द
क्रोध को जीतो　　गोविन्द
क्षमा के द्वारा　　गोविन्द
रखो ब्रह्मचर्य　　गोविन्द
मौन व्रत रखो　　गोविन्द
करो प्रेम-सेवा-दान　　गोविन्द
निर्धन की सेवा　　गोविन्द
पितुमात की सेवा　　गोविन्द
रोगी की सेवा　　गोविन्द
दान दिया करो　　गोविन्द
बनो दयालु शुद्ध　　गोविन्द
बन भले भलाई करो　　गोविन्द
प्रसन्न रहना　　गोविन्द
साहसी रहना　　गोविन्द

सहिष्णु रहना गोविन्द
धीर रहना गोविन्द
क्षमावान रहना गोविन्द
उदार रहना गोविन्द

० ० ०

अति मत करना गोविन्द
भोजन पान में गोविन्द
रति भोग में गोविन्द
हर एक काम में गोविन्द
करो नियम का पालन गोविन्द

० ० ०

उठो चार बजे गोविन्द
ब्रह्म मुहूर्त में गोविन्द
मैं कौन हूं विचारो गोविन्द
यह आवश्यक है गोविन्द
सफलता के लिये गोविन्द

० ० ०

सुख नहीं है गोविन्द
विषयों में कुछ गोविन्द
यह संसार है गोविन्द
दुख और मृत्यु गोविन्द
धोखा मत खाना गोविन्द
मन और इन्द्रियों से गोविन्द

कभी ना पढ़ना गोविन्द
हर्बर्ट स्पेन्सर गोविन्द
यह तुम्हें बनावे गोविन्द
परम नास्तिक गोविन्द
बनावेगा यह गोविन्द
अनुचित संस्कार गोविन्द

० ० ०

नित्य ही पढ़ना गोविन्द
गीता उपनिषद गोविन्द
सहायक होंगे गोविन्द
आत्मा की प्राप्ति में गोविन्द

० ० ०

सिगरेट मत पीना गोविन्द
मद्य ना पीना गोविन्द
गाली मत देना गोविन्द
गन्दी बात ना कहना गोविन्द

० ० ०

रिश्वत मत लेना गोविन्द
यह बात बुरी है गोविन्द
यह बहुत बुरी है गोविन्द
अत्यन्त बुरी है गोविन्द
यह बिगाड़ देगी गोविन्द
यश और चरित्र को गोविन्द
यह ढकेल देगी गोविन्द

नीचे जन्मों में गोविन्द
अपयश लेना गोविन्द
है मृत्यु से बढ़कर गोविन्द
लज्जा की बात है गोविन्द
अपमान जनक है गोविन्द
निन्दा की बात है गोविन्द
है स्वर्ग की बाधक गोविन्द

० ० ०

समय अमूल्य है गोविन्द
एक क्षण ना गंवाओ गोविन्द
उपयोग में लाओ गोविन्द
जप और कीर्तन में गोविन्द
ईशध्यान में गोविन्द

---

५. अठारह गुणों का गीत

[तर्ज—सुनाजा······]

प्रसन्नता अवस्था निरहंकारिता
निष्कपटता सरलता सत्यशीलता
मन और निश्चय की स्थिरता क्रोध हीनता
अनुकूलता नम्रता लगन की दृढ़ता

ईमानदारी शिष्टता और उदारता
दानदया सौजन्य पवित्रता
इन अठारह गुणों का अभ्यास हो निशिदिन
शीघ्र प्राप्त हो जावेगी अविनाशिता।

० ० ०

ब्रह्म ही तो एक मात्र है सच्ची सत्ता
'अमुक महाशय' तो है केवल मिथ्या असत्ता
रहोगे आप नित्यता में और असीमता में
देखोगे आप एकता अनेकता में
नहीं प्राप्त होती यह विद्या विश्व विद्यालय में

अहं-हीनता निर्ममत्व, और निर्भयता
निरहंकारता स्वार्थहीनता वासनाहीनता

---

६. विश्व दर्शन का गीत

न्द माधव हरि, वासुदेव नारायण, श्री राधा वल्लभ वृन्दावन चन्द्र
श्री सीता वल्लभ अयोध्या चन्द्र

राघव मधुसूदन, गोपीवल्लभ पद्मनाभ,
श्री वामन त्रिविक्रम हृषिकेश
श्री राम कृष्ण दामोदर केशव

[illegible] सफल विफल होकर.

करो मुक्त अपने को आसक्तियों से
अपने मन को मोड़ो सारे विषयों से
अथक यत्न करो इन्द्रिय दमन करो शान्त करो मन को
आत्मा पे लगाओ
निर्विकल्प समाधि में जाओ
अनन्त की शान्ति को भोगो।
धर्म दीप को पकड़े रहो बनाओ प्रेम विचार
करो शान्त ज्वाला को काम क्रोध लोभ की
बनो चिकित्सक अपनी आत्मा के
आनन्द देश में ऊंचे पहुंचो एकता में करो विश्वदर्शन
धन्य वही है जिसने अनुभव करली एकता
सुखी वही है जिसने अपने आपको जाना

———

ॐ

पञ्चम परिच्छेद

योगाभ्यास

१. गुरु गीता

[तर्ज—सुनाजा······]

प्रणाम, नमस्कार, गुरु को दंडवत
गुरु है ब्रह्मा गुरु है शिव गुरु है विष्णु ।
गुरु है पिता, गुरु है माता, सच्चा मित्र गुरु,
भक्ति युक्त हो, पूर्ण भाव से, सेवा करो उसकी,
वह सिखलायेगा ब्रह्म विद्या दिखलाकर दिव्य मार्ग
गुरु की सेवा पावन करती है तुम को जग में ।

ब्रह्म विद्या गुरुओं को पूजा गुरुपूर्णिमा को करो
नारायण, ब्रह्मा वसिष्ठ शक्ति पराशर,
व्यास, शुक, गौड़पाद, गोविन्द, शंकर
पद्मपाद, हस्तामलक, त्रोटक, सुरेश्वर,
आशीर्वाद देवें ज्ञान सिखावें रक्षा करेंगे।

गुरु कृपा आवश्यक है, आत्म प्राप्ति को
ईश्वर के समान गुरु की भक्ति करो तुम
तब ही तत्व दर्शन होगा तुम को प्रकट।

नहीं आशा गुरु से, चमत्कार की, लिये समाधि के
आप ही तुम को करना होगा अति कठोर साधन
वह दिलावे प्रेरणा हटावे बाधा और विघ्न सारे।

दोष दृष्टि मत रखना कभी तुम अपने गुरु में
इससे बाधा पड़ती है आध्यात्मिक उन्नति में
देव तुल्य महिमा समझो पूजा करो गुरु की
गुरु शिष्य का परम पवित्र है जीवन सम्बन्ध
जब तक जीवित रहो इसे मत तोड़ना प्यारे।

पिता तुम्हारा देता है यह स्थूल शरीर
गुरु होवे सहायक संसार तरने में
वह बिल्कुल बदल देता है संसारी स्वभाव
उसकी शिक्षा खोलती है आंख तुम्हारी।

अमृतत्व सुधा के पाने में सहायक है तेरा
उऋण नहीं हो सकते गुरु से लाखों जन्मों में
श्रद्धा और भक्ति से एक गुरु को मान लो
जल्दी लक्ष्य प्राप्त करने का श्रेष्ठ मार्ग है यह

---

२. कर्मयोगी का गीत

हरि के प्रेमी हरि हरि बोलो
आवो प्यारे मिलकर गाओ
हरि चरण में ध्यान लगाओ
दुख में सुख में हरि हरि बोलो
अभिमान त्यागो सेवा करो
नारायण नारायण नारायण नारायण
ाह्मण संन्यासी अभिमान त्यागो
त्री पुरुष का अभिमान त्यागो
ाक्टर जज का अभिमान त्यागो
ाजा जमींदार अभिमान त्यागो
ण्डित वैज्ञानिक अभिमान त्यागो
ोफेसर इञ्जीनियर अभिमान त्यागो
लेक्टर तहसीलदार अभिमान त्यागो

वैराग्य सेवा का अभिमान त्यागो
त्याग कर्तापन का अभिमान त्यागो

नारायण नारायण......

सुमरन सदा करो हरि हरि हरि हरि
कीर्तन सदा करो सीताराम राधेश्याम
हरएक मुख में भगवान देखो
अपनी वस्तु दूसरों को भी बांटो
अनुकूलता खूब बढ़ाओ
नारायण भाव से सेवा सदा करो
निमित्त कारण सदा विचारो
अहंकार छोड़ के कर्म करो सब
निमित्त भाव को बसाओ मन में
कर्म फलों की आशा त्यागो।
सदा कर्मफल प्रभु को सौंपो
रखो मन की समता समत्व दृष्टि
निष्काम सेवा शुद्ध चित्त करो
तभी आपको आत्म-ज्ञान मिले।

३. अमृत-गीत

राम राम राम राम जय सीता राम
जय जय राधेश्याम

दृष्टि घुमाओ मोड़ो इन्द्रियां
शान्त करो मन बुद्धितीव्र
भाव सहित उच्चरो ॐकार
धरो ध्यान निज आत्मा का
भाव सहित उच्चारो राम
सीता राम का ध्यान धरो
भाव सहित उच्चारो श्याम
राधे श्याम का ध्यान धरो
हे ज्योति पुत्रो क्या नहीं करोगे
अमर सुधा का सुखमय पान ?
सारे कर्म अब भस्म हुए
जीवन्मुक्त अब आप हुए
उस श्रेष्ठ अवस्था तुरीयातीत का
वाणी नहीं कर सके कथन
हे ज्योति पुत्रों क्या नहीं करोगे
अमर सुधा का सुखमय पान ?
घास हरी है लाल गुलाब
नीलवर्ण है शून्य आकाश

किन्तु आत्मा वर्ण रहित है
निराकार और निर्गुण भी
हे ज्योति पुत्रों क्या नहीं करोगे
अमर सुधा का सुखमय पान ?

अल्प है जीवन समय बीतता
दुःखपूर्ण यह सब संसार
ग्रन्थि अविद्या की काटो तुम
पियो मधुर निर्वाण सुधा
हे ज्योति पुत्रों क्या नहीं करोगे
अमर सुधा का सुखमय पान ?

दैवी सत्ता जानो सब कहीं
देखो दैवी महिमा चहुं ओर
दैवी उद्गम में फिर डूबो
सदा रहो आनन्द विभोर
हे ज्योति पुत्रों क्या नहीं करोगे
अमर सुधा का सुखमय पान ?

आसन कुम्भक मुद्रा करके
जगाओ कुण्डलिनी शक्ति
चढ़ाओ इसको सहस्रार में
सुषुम्ना के चक्रों द्वारा

हे ज्योति पुत्रों क्या नहीं करोगे
अमर सुधा का सुखमय पान ?

---

४. जीवन लक्ष्य का गीत

राम राम राम राम जय सीता राम रामा रामा रामा
श्याम श्याम श्याम श्याम जय राधेश्याम कृष्ण कृष्ण कृष्ण
राम राम राम राम रामा रामा रामा रामा जय राधेश्याम

जीवन का लक्ष्य आत्म प्राप्ति करो चेष्टा करो चेष्टा
रामा रामा रामा राम.......

जीवन का लक्ष्य आत्म प्राप्ति करो भजन करो भजन
करो कीर्तन करो कीर्तन
करो साधन करो साधन
रखो वैराग्य रखो वैराग्य
करो सत्सङ्ग करो सत्सङ्ग
रामा रामा रामा रामा......

षड् रिपुओं को मारो पाओ आनन्द आनन्द आनन्द
षड् रिपुओं को मारो काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य
बन गये आप अब जीवन्मुक्त
बन गये आप अब योगीन्द्र

बन गये आप अब भागवत
बन गये आप अब मुनिश्रेष्ठ
राम राम राम राम...... ....

---

५. दिव्य जीवन गीत

गोपाल गोपाल मुरली लोल
यशोदानन्दन गोपी बाल—
सेवा प्रेम दान शौच अहिंसा करो
सत्यम् ब्रह्मचर्य गीता पढ़ो
सत्सङ्ग इन्द्रिय निग्रह जप कीर्तन
ब्रह्ममुहूर्त में ध्यान करो 'आप' को जानो
सब से करो प्रेम सब पर दया
है कर्म ही पूजा करो विश्व सेवा
धारण विचार ध्यान शुद्धि करो
'मैं कौन हूं' विचार द्वारा जानो आत्मा
धारण विचार ध्यान शुद्धि करो
सेवा प्रेम दान और अनासक्त रहो
माया ब्रह्म संसार और 'मैं' जानो
जीवन लक्ष्य है सौम्य देखो निकट

६. संकल्प शक्ति का गीत

भजो राधे कृष्ण भजो राधेश्याम

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

सोऽहम् सोऽहम् सोऽहम् शिवोऽहम्

संकल्प आत्मबल शक्तिमान है

संकल्प दृढ़ करो मिले आत्म दर्शन

अनेक वासनाओं से दुर्बल हुई इच्छा

विवेक वैराग्य त्याग से करो नष्ट वासना

भजो राधे कृष्ण.......

संकल्प है प्रबल मैं पर्वत को उड़ा दूं

लहरें सागर की रोकूं करूं तत्वों पे शासन

करूं प्रकृति को वश में, मेरा है विश्व संकल्प

मुनि अगस्त्य की भांति सागर को सुखा दूं

भजो राधे कृष्ण..........

शुद्ध प्रबल इच्छा है कोई ना रोक सके

करूं वश में लोगों को सफल होता हूं सदा

मैं हूं स्वस्थ और पुष्ट सदा रहता हूं मगन

लाखों दूर के मित्रों को भेजूं सुख और शान्ति

केवल दृष्टिमात्र से समाधि दिला दूं

संकल्प के द्वारा करूं शक्ति संचार

योगी हूं योगियों का सम्राटों का सम्राट
नर पतियों का राजा शाहों का शाह हूं
साधारण स्पर्श से साधक को उठा दूं
सत्सङ्कल्प शक्ति से चमत्कार दिखा दूं
लाखों को रोग मुक्त करूं दूर बैठ के
दृढ़ इच्छा के द्वारा, करो इच्छा को प्रबल

भजो राधे कृष्ण.......

वासनाओं को त्यागो करो आत्म चिन्तन
यह सीधा मार्ग है संकल्प सिद्धि का
डायरी लिखो चिन्ताओं को त्यागो
साधारण तप करो अवधान बढ़ाओ
धैर्य बढ़ाओ और क्रोध को जीतो
जीतो इन्द्रियों को करो ध्यान अभ्यास
सहनशक्ति रखो ब्रह्मचर्य को पालो
सहायक ये होंगे संकल्प सिद्धि में

भजो राधे कृष्ण भजो राधेश्याम
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

---

७. शिव लोरी

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम
सुबह से श्याम तक सुबह के होने तक
हरि का नाम जपो राम राम राम राम राम राम

जीवन का ध्येय है आत्म प्राप्ति
प्रतिदिन करो कीर्तन पाओ आत्मानन्द
राम राम राम राम राम......

करो निष्काम कर्म योग हृदय-मन शुद्ध हो
इन्द्रिय दमन करो स्थित हो स्वरूप में
राम राम राम राम राम......

जीवन के युद्ध में जब ठोकरें लगें
मन मुड़ेगा आप अध्यात्म मार्ग में
ले विवेक वैराग्य संसार से घृणा
इच्छा हो मोक्ष की धरो गम्भीर ध्यान
राम राम राम राम राम......

चमको चमको नन्हे तारे अचरज देखूं रूप तुम्हारे
जगत के ऊपर कितने ऊंचे हीरे से आकाश में चमके
दीप्त सूर्य हो गया है अस्त
घास हो गई ओस से तर

हुई प्रकट तेरी लघु ज्योति
रहे चमकती सारी रात भर
राम राम राम राम राम''

हरि ॐ नारायण हरि ॐ नारायण
हरि ॐ नारायण हरि ॐ नारायण

---

८. ध्यान का गीत

राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम
राम

सत्य ही है ब्रह्म, है तेरा आत्मा
पाओ इस सत्य को, मुक्त हो मुक्त हो, मुक्त हो मुक्त
ईश प्राप्ति चाहो यदि, मन को शुद्ध बनाओ
कर्मयोग अभ्यास करो शुद्ध हो शुद्ध हो, शुद्ध हो शुद्ध हो

मन की शान्ति नहीं मिले, ध्यान का अभ्यास न हो
काम के वश रहो यदि, नष्ट करो इस काम को

नियम सहित ध्यान करो और करो सात्विक भोजन,
मन की शान्ति मिलेगी, सत्य है यह सत्य है यह

ध्यान करते जब हरि का सामने चित्र उनका रखो
दृष्टि जमाकर देखो उसे बढ़े तुम्हारी धारणा

मन में आवें जो दुर्विचार बल से उन्हें मत निकालो
दिव्य विचार मनमें लाओ स्वयं ही भाग जावेंगे।

ध्यान से ज्ञान मिलता है ध्यान मारे दुःख को
ध्यान से शान्ति आती है ध्यान करो ध्यान करो
ईश्वर संयोग समाधि है ध्यान के पीछे आती है
तुम को अमरत्व मिलेगा यही है मोक्ष यही है मोक्ष

---

९. सच्चे धनवान का गीत

सुनाजा सुनाजा सुनाजा कृष्ण
तू गीता वाला ज्ञान सुनाजा कृष्ण

सच्चा धनवान् वोही जिसको है आत्म ज्ञान
राजा और करोड़ पति को निर्धन ही तू जान
भक्ति जिसको प्राप्त होगई वो ही है धनवान
डाक्टर या एडवोकेट को निर्धन ही तू जान
इन्जीनियर और बैंकर को दरिद्री तू मान

अन्तरा

जिसने मन को जीत लिया ईशों का ईश वह
जिसको नहीं वासना, वह राजाओं का राजा

अहंकार से हीन पुरुष है महाराजाधिराज
काम रहित नर जगत में है राजाओं का राजा
निर्भय पुरुष कहाता है शाहों का भी शाह
ज्ञानवान पुरुष है नरपतियों का सम्राट
ज्ञानवान पुरुष है सब से अधिक सुखी
भक्ति वाला पुरुष बहादुर है सब वीरों में
भक्ति वाला पुरुष परम शान्ति है भोगता

सुनाजा सुनाजा......

ॐ

षष्ठः परिच्छेद

वेदांत साधन

१. ज्ञान वैराग्य का गीत

सुनाजा सुनाजा सुनाजा कृष्ण
गीता वाला ज्ञान सुनाजा कृष्ण

पहले होती मधुर भावना, फिर होता अनुराग
दीप्त प्रेम में यही बदल जाता आगे चल कर

श्रवण और सत्सङ्ग के द्वारा उपजे सराहना
फिर आकर्षण, आसक्ति से होता परम प्रेम।

मुझ को तो इच्छा है केवल प्यारे कृष्ण की
संसारी सुख नहीं चाहिये और ना चाहिये मोक्ष
दुनियां तो यह झूठी है दुःखों से भरी हुई
एक मात्र भगवान है सच्चा आनन्द का भण्डार
तुम पीछे पीछे भागते झूठी छाया के
भूल रहे हो प्यारे क्यों असली तत्व को।

रोते आये जाओ, अकेले, कोई ना जावे साथ
भजन और कीर्तन जो करलो येही जावे साथ
व्यर्थ क्यों झगड़ा करते हो तुम अपने भाइयों से
झगड़ा करना है तो करो मन और इन्द्रियों से
सम्बन्धी की मृत्यु पर क्यों रोते हो भाई
जुदा हुए भगवान से इस पर क्यों नही रोते।

स्वार्थ पूर्ण होता है प्रेम पति और पत्नी का
भाई और बहनें मिलते हैं अपने मतलब से
काल खड़ा है इन्तजार में खाये तुम सब को
कल, कल, करते नहीं आए कल, आंखें तो खोलो।

जीवन थोड़ा, समय बीतता, बहुत सी बाधायें
यत्न पूर्वक लग जाओ अब योग साधन में
जप और कीर्तन में।

यह दुनिया है दर्शन मेला केवल दो दिन का

यह जीवन है खेल प्यारे केवल दो छिन का
ईश्वर से जब होवे एकता, कहते समाधि
योगी को मिलता है असीम ज्ञान और आनन्द

नाव से तरना नदी को जैसे ये है भक्ति योग
आप तैरकर पार पहुंचना—कहते ज्ञान योग

ज्ञान मिले ज्ञानी को अपने ही विश्वास से,
दर्शन मिलता भक्त को पूरो आत्म समर्पण से

एक वृत्ति जब रहती समाधि है सविकल्प
तृपुटीलय के होने से कहलाती निर्विकल्प

चौथी भूमिका में जो पहुंचे जीवन्मुक्ति कहे
विदेह मुक्ति कहो उसे जब देह ज्ञान ना हो

तुरीयावस्था में जब रहते, जीवन्मुक्ति मिले
तुरीयातीत में पहुंचो जब, होवे विदेह मुक्ति

सरूपनाश होता जब मन का जीवन्मुक्ति हो
अरूप नाश हो जाने से मिलती विदेह मुक्ति

जगत भासता सुपना सा जब, हो जीवन्मुक्ति
सुषुप्ति सा जब दिखे जगत, कहते विदेह मुक्ति

२. वैराग्य का गीत

रामा रामा राम हे सीता राम
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

बेकार क्यों ढूंढते हो
आनन्द बाहर की ओर
इसके उद्गम पे जाओ
चैतन्य आत्मा में
जागो उठो मत रुको जब तक न लक्ष्य को पाओ
रामा रामा राम·······

कब तक चाहते हो रहना
गुलाम इस लालसा के
अन्दर शान्ति को खोजो
वैराग्य अभ्यास से
जागो, उठो, मत रुको जब तक न लक्ष्य को पाओ
रामा रामा राम······

क्या तुम उकताये नहीं हो
भ्रमपूर्ण विषयों से

मनन निदिध्यासन से
जागो, उठो, मत रुको जब तक ना लक्ष्य को पाओ
राम राम राम"""

---

३. चेतावनी का गीत

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
राधेश्याम राधेश्याम श्याम श्याम राधे राधे
राधेकृष्ण राधेकृष्ण कृष्ण कृष्ण राधे राधे
गौरीशङ्कर गौरीशङ्कर शङ्कर शङ्कर गौरी गौरी
उमाशङ्कर उमाशङ्कर शङ्कर शङ्कर उमा उमा
हे मेरे ईसा हे प्रभु ईसा जय जय ईसा हे पिता ईसा
हे मेरी मैरी कुमारीमैरी जय जय मैरी हे माता माता
हे मेरे बुद्ध हे प्रभु बुद्ध जय जय बुद्ध हे रक्षक त्राता
हे मेरे अल्लाह हे प्रभु अल्लाह जय जय अल्लाह हे पिता पिता
हे मेरी शक्ति हे आदि शक्ति जय जय शक्ति हे माता माता
खाने पीने से और सोने से उत्तम क्या कोई और काम नहीं है
बड़ा कठिन है नरदेह पावना इस जन्म में ही मोक्ष प्राप्ति करो
उस भाग्यहीन को धिक्कार खेद है जो जीवन बितावे विषयों के
भोग में

काल खाता है राजा औररंकको युधिष्ठिर कहां है अशोक कहां है ?
शेक्सपीयर कहां है बाल्मीकि कहां है ?
नेपोलियन कहां है शिवाजी कहां है ?

इस लिये उठो करो योग साधना तुम को मिलेगा परम आनन्द
इस लिये उठो करो ब्रह्म विचार तुम प्राप्त करोगे कैवल्य मोक्ष।
हरे राम हरे राम..........

क्या तुमको मिलेगी सच्ची शान्ति जो समय खोते हो बेकार
गपशप में
क्या प्राप्त करोगे परमानन्द को जो समय खोते हो नावेल
अखबारों में ?
लड़ाई झगड़ों मे
चुगली और निन्दा में

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

---

४. चेतावनी का गीत

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

'मैं' क्या 'तू' नहीं हूं 'तू' क्या 'मैं' नहीं है, तो दोनों में एक ही सच है

जब लीन होगा मन अन्तर्मौन में तुम को होवेगा आत्मसाक्षात्कार।

क्या तुमने सीखा है, मुझ को बताओ, बिहार और क्वेटा के भूकम्प से

क्या तुम को हुआ है सच्चा वैराग्य, अभ्यास करते हो क्या जप संकीर्तन का

है साफ चुनौती अविश्वासी जनों को, पुनर्जन्म के हिन्दु सिद्धान्त में

क्या सुनी नहीं हैं वो अद्भुत कथाएं शान्ति देवी के पूर्व जन्म की

क्या आशा है तुमको सच्ची शान्ति की यदि समय खोते हो ताश और सिनेमा में

जब अन्त समय में यह कण्ठ रुकेगा सहायक होगा कौन तेरी मोक्ष प्राप्ति में?

हरे राम............

---

५. सच्ची साधना का गीत

करो सच्ची साधना मेरे प्यारे बच्चो
साधना—साधना—साधना—साधना

जन्म मरण से छूटने को
सर्वोच्च आनन्द पाने को
बेचूक मार्ग बताऊं तुम्हें
सावधानी से सुनना मुझे
करो सच्ची साधना.......

पहले करो प्राप्त साधन चतुष्ट्य
फिर जाओ सत्गुरु के चरण में

श्रवण और मनन कर चुको
फिर निदिध्यासन का अभ्यास करो

करो सच्ची साधना......

पहले पुराना देहाध्यास हटाओ
शिवोऽहं भावना रटते रटते
फिर अज्ञान का आवरण हटाओ
होवोगे स्थित स्वरूप में।

करो सच्ची साधना......

---

६. ब्रह्म विचार का गीत

ब्रह्म विचार साधन द्वारा
कैवल्य मोक्षम् अवाप्स्यसि

करो साधन चतुष्ट्य
श्रवण मनन निदिध्यासन

ॐ ॐ ॐ..........

ब्रह्म विचार अभ्यास द्वारा
प्राप्त होवे मोक्ष परमपद

चारों साधन का अभ्यास करो
श्रवण, मनन, निदिध्यासन

ॐ ॐ ॐ..........

---

७. साधन चतुष्टय का गीत

म राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम

; और असत् का भेद समझ लेना ही विवेक है
ं और मृत्यु लोक के भोगों से उदासी वैराग है
' है मन की शान्ति, वासनाओं को निकाल कर
है इन्द्रियों का संयम, हटा के विषयों से उन्हें
राम राम राम राम राम.........

ति है कर्मों का त्याग, तृप्ति से या संन्यास से
ता है सहन शक्ति जाड़े गर्मी, रोग और दुःख में
ों में विश्वास है श्रद्धा, गुरु वचनों में, आत्मा में
ान है एकाग्रता, इन सब के अभ्यास से मिले
त्व है तीव्र इच्छा मोक्ष प्राप्त करने की
राम राम राम राम राम..........

है श्रुतियों का सुनना गुरु चरणों में बैठ कर
—सुने को विचारना मिलता है इससे निदिध्यासन

निदिध्यासन है गम्भीर-ध्यान, प्राप्त करावें साक्षात्कार
आत्मा से एकता समाधि है यह देगी आपको अमरता
राम राम राम राम राम·······

---

८. अमृत का गीत

समाधि में रहने वाले योगी को अमृत सुधा का पान है
आसव पीने से क्या लाभ है ? हे सौम्य हे सौम्य हे सौम्य ।

आत्मा को जिसने प्राप्त किया, अपने अन्दर संसार देखता
वासना उसको कैसे हो ? हे सौम्य···············

आत्मा समान सुख नहीं ज्योति ना आत्म तुल्य है
पहचानो अपना आत्मा हे सौम्य·········
अथक सेवा करो हे सौम्य
निष्काम सेवा, तीव्र मुमुक्षा
प्रार्थना भक्ति युत करो हे सौम्य·········

सत्य जीवन हो हर्षित मन हो आनन्द पाकर तृप्त हो
शान्ति समेत स्थित रहो, हे श्याम··········

नियम से मन की जांच करो
निरन्तर मनन करो, निदिध्यासन गम्भीर करो
पूर्ण साक्षात्कार करो मेरे दुलारे राम··········

६. हर्ष का गीत

सा सा ध ध सा सा ध ध
प प ध प म म म प म ग ग ग म ग सा
सा सा ग म प प ध सा नि ध प म म

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ईश्वर छिपा, तेरे भीतर
बसा है अविनाशी आत्मा

तुच्छ 'मैं' को मार दो
जीवन पाने को मरो
दिव्य जीवन व्यतीत करो

आनन्द स्रोत तेरे अन्दर
सुख का समुद्र है भीतर

शान्ति समेत स्थित रहो
अपने ही आत्मा में
अमृतत्व-सुधा का पान करो

१७. वेदान्ती का गीत

ब्रह्माकार-वृत्ति उठाओ,
सहज़ अवस्था में स्थित रहो
ब्रह्मज्ञान में—कीर्ति—ब्रह्मज्ञान में।

मौन ध्यान द्वारा समाधि में जाओ
ब्रह्म चेतना में स्थित हो जाओ
परम शान्ति···नित्य···तृप्ति
सत् चित् आनन्द···मोक्ष···सच्चिदा

अहंता ममता का नाश करो
विवेक और विचार द्वारा
हो ज़ाओ चैतन्य स्वरूप···ज्योति···चैतन्य स्वरू
निष्काम्यकर्म योग से पात्र की शुद्धि कर रखो
दसों प्रधान उपनिषदों का स्वाध्याय आरम्भ करो
फिर करो, श्रवण···मनन···निदिध्यासन
बन जाओ—प्रज्ञान घन—आत्मा—आनन्द घन

ब्रह्माकार वृति उठाओ

११. सोऽहम् गीत

सोऽहम् सोऽहम् सोऽहम् सोऽहम् सोऽहम् सोऽहम् सोऽहम्
सोऽहम् सोऽहम् सोऽहम् सोऽहम् सोऽहम् सोऽहम् सोऽहम्

जय राधे राधे राधे जय राधे राधे राधे

जय रामा रामा रामा जय रामा रामा रामा

सोऽहम् मन्त्र का जाप करो
देहाध्यास छोड़ने को
ब्रह्मज्ञान पाने को
सोऽहम् सोऽहम् सोऽहम् जपो
नेति नेति श्रुति वाक्य अभ्यास करो
फिर नाम और रूप मिट जावें
केवल सत्ता ही शेष रहे।
सोऽहम् मन्त्र का जाप करो

अखण्ड सत् चित् आनन्द
व्यापक एक रस परिपूर्ण
व्योमवत सर्वव्यापी
स्वयं ज्योति ज्ञानामृतम्
सोऽहम् मन्त्र का जाप करो

आनन्द हर्ष अमृतत्व
पाता यहां मन नित्य विश्राम

सब क्लेशों कर्मों का अन्त हो
अपनी महिमा से प्रकाश करो
सोऽहम् मन्त्र का जाप करो

---

१२. मोक्ष गीत

राम राम राम राम राम सीता राम
सीताराम राधेश्याम हरे कृष्ण हरे राम
राम राम राम राम राम राम राम सीता राम

कृष्ण स्वामी अन्तर्यामी सर्वशक्तिमान
नित्य शुद्ध सिद्ध बुद्ध सच्चिदानन्द
नारायण वासुदेव मुकुन्द मुरारी
हृषिकेश पद्मनाभ माधव गोविन्द
दमोदर श्रीनिवास मधुसूदन
सीताराम राधेश्याम श्रीधर त्रिविक्रम
कब मुक्त होऊंगा जब 'मैं' नहीं रहे
आत्म केन्द्रित हो आत्मानन्द लो
मल दूर करो विक्षेप आवरण को हटाओ
कर्मयोग उपासना और ज्ञान के द्वारा

ॐ

सप्तम परिच्छेद

वेदान्त दर्शन

१. एकता का गीत

राम हरे सिया राम राम
राम हरे सिया राम राम
राम हरे सिया राम राम
राम हरे सिया राम राम
ईश्वर ने सृष्टि क्यों रची ?
बुद्धि से दूर है प्रश्न वह
उत्तर किसी ने नहीं दिया
ज्ञान होने से समझोगे ॥

अपने भाग्य का स्वामी मनुष्य है
वसिष्ठ पुरुपार्थ सिखलाते हैं
तुमने प्रारब्ध बनाया अपना
विचार का ढंग वदल डालो ॥

समझो सदा 'मैं ब्रह्म हूं'

विवाहित आनन्द में
दोनों मिल कर एक हुए
दो मित्रों का एक हृदय है
केवल एक ही आत्मा है ॥

तुम्हारी सत्ता है या नहीं
हर कोई जानता है 'मैं हूं'
इससे प्रकट है आत्मा की सत्ता
सत्ता ही सत् ब्रह्म है ॥

विपयी जीवन अधूरा है
मनुष्य चाहे स्थायी आनन्द
जाने नहीं कहां पावेगा
खोजना होगा अपने अन्दर ॥

ब्रह्म तो मन से अतीत है
साधन सम्पन्न शुद्ध मन

निश्चय उसको पा सके
इस लिये बनाओ सात्विक मन ॥

भक्त को मिलती क्रम मुक्ति
वह ब्रह्मलोक को जाता है
ज्ञानी पाता है सद्योन्मुक्ति
उसको नहीं उत्क्रमण है ॥
राम हरे सिया राम राम

---

२. अद्वैत गीत

भजो राधे कृष्ण भजो राधेश्याम
भजो सीताराम भजो सियाराम
सोऽहम् सोऽहम् सोऽहम् शिवोऽहम्
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

मन और देह नहीं हूं, मैं हूं अमर आत्मा
साक्षी तीनों अवस्थाओं का—परम सत्ता
साक्षी तीनों अवस्थाओं का—परम चेतना
साक्षी तीनों अवस्थाओं का—परम आनन्द
कुछ भी नहीं कुछ मेरा नहीं है
भजो राधे कृष्ण

मैं यह देह नहीं हूं   देह मेरी नहीं है
मैं यह प्राण नहीं हूं   प्राण मेरा नहीं है
मैं यह मन नहीं हूं   यह मन मेरा नहीं है
मैं यह बुद्धि नहीं हूं   बुद्धि मेरी नहीं है
मैं तो वो ही हूं   मैं तो वो ही हूं
सोऽहम् सोऽहम्   सोऽहम् सोऽहम्

भजो राधे कृष्ण……

मैं हूं सत् चित्   आनन्द स्वरूप
मैं हूं नित्य शुद्ध (बुद्ध)   मुक्त स्वभाव

मैं स्वयं प्रकाश   मैं हूं शान्ति स्वरूप
मैं हूं अकर्ता   मैं हूं अभोक्ता
मैं हूं असङ्ग   मैं हूं साक्षी

प्रज्ञानं ब्रह्म   अहं ब्रह्माऽस्मि
तत् त्वमसि   अयमात्मा ब्रह्म
सत्यं ज्ञानम्   अनन्तं ब्रह्म

एकम् एव   अद्वितीयम्
सर्वं खल्विदं ब्रह्म नेह नानाऽस्ति किञ्चन

भजो राधे कृष्ण भजो राधेश्याम

३. मौन का गीत

राम राम राम राम राम राम राम राम सीता राम
राम राम राम राम सिया राम

गम्भीर ध्यान से जब पहुंचोगे मौन में
बाहर की सारी दुनियां और क्लेश दूर हों।

इसी मौन में परम ज्योति और अनन्त आनन्द
इसमें ही सच्ची शक्ति और है सुख शाश्वत भी।

इन्द्रियों के द्वार बन्द, विचार भाव शान्त
प्रात:काल में बैठो अचल शान्त ॥

विचरो प्रभु के संग और सम्भाषण करो
इस महामौन में परम शान्ति लो ॥

मौन ब्रह्म है मौन है शान्ति
है उसकी भाषा मूक और मौन उसका नाम

राम राम राम राम......

---

४. महापुरुष का गीत

राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम

ईश्वर कृपा छिपी दुःख में मनुष्य के
है दुःख सब से उत्तम संसार की वस्तु।

है मूक गुरु ये ही, आंखों को खोलता
दुःख लगावे मन को भगवान की तरफ़
भरता है हृदय में, भण्डार दया का।

करता है वृद्धि धैर्य और सहन शक्ति की
संकल्प शक्ति को भी दृढ़ करता दुःख है।

जब चाहती प्रकृति है उठाना मनुष्य को
तो डालती उसे है कुठाली में दुःख की।

शोक तो मिथ्या है भ्रम है, रह नहीं सकता
आनन्द सच्चा और नित्य, मर नहीं सकता।

जन्म सिद्ध तेरा है अधिकार मोक्ष
आनन्द पैतृक सम्पत्ति दुःख नहीं है

मोक्ष नाकि बन्धन जन्माधिकार है
सुख तेरी विरासत है नकि दुःख क्लेश।

त्याग लगावेगा तुझे श्रेष्ठ कार्यों में
पहुंचावे आत्म कीर्ति और आनन्द शिखर पे।

बेड़ा आत्म ज्ञान का ले जायेगा उस पार
सुख से तुझे भव सिन्धु की तूफानी लहरों से।

ज्यों फूटने से घट के, घटाकाश थिर रहे
त्यों देह नष्ट होने से थिर रहता आत्मा।

अजन्मा, अविनाशी, अक्षर है आत्मा
स्वयं ज्योति, स्वयम्भू, आत्मपूर्ण है।

---

५. ब्रह्मज्ञानी का गीत

[तर्ज—हरे राम······हरे]

ईश्वर एक है अद्वितीय है नाम और रूप से विहीन है
सच्चिदानन्द लक्षण उसका, व्यापक है वह सब मूर्तियों में।

स्वयं ज्योति, स्वयं पूर्ण, स्वयम्भू है परमात्मा
आत्म अधिष्ठित, आत्मज्ञान, आत्मसत्ता है ईश्वर।

विश्व का आधार, सब मनों का मन, प्राणों का प्राण, गर्भ श्रुतियों का
नेत्रों का चक्षु, कान श्रोत्रों का, श्रोता वही है सारे कानों में

मूक साक्षी, शुद्ध चेतना, अक्षर और परिपूर्ण है
आनन्द असीम, अविनाशी, अनन्त, अन्तरात्मा है वह
ज्योतियों की ज्योति, सूर्यों का सूर्य, नरपतियों का राजा, स्वामी है प्रभुओं का
इन्द्र वेदों का, उपनिषदों का ब्रह्म पुराणों का हरि वही है
मैं पूजता उसको, स्तुति उसकी करता, प्रणाम उसको कर पहुंचता निकट
हृदय का कमल, धरता हूं उसका ध्यान 'शिव केवलोऽहम्'

घृणा और द्वेष दूर रखने को बना
हर्ष और प्रेम बन्द करने को बना
स्वर्ग से वरदान है देवताओं का
यही है ॐ

हर हर हर हर बम्

भण्डार घर है ॐ खजाने का
विधा के मोती, ज्ञान के बैंक
आनन्द के हीरे, दया का सुवर्ण
ज्ञान का अमृत, ज्योतियों की ज्योति
यही है ॐ

हर हर हर हर बम्

मधुर घर है तुम्हारा ॐ
परम धाम है आपका ॐ
ब्रह्म का प्रतीक ॐ
पुनर्जन्म का नाशक ॐ
यही है ॐ

हर हर हर हर बम्

---

७. विराट गीत

भजो राधे कृष्ण भजो राधेश्याम
सब संसार मेरी देह वनस्पति रोम हैं
सारी देह मेरी हैं सब देहोंमें मैं भोगता
मेरे हैं सारे मुख सब मुखों से खाता हूं
सारी आंखें मेरी हैं सब आंखों से देखता

भजो राधेकृष्ण भजो राधेश्याम....

सारे कान मेरे हैं सब कानों से सुनता हूं
सारी नाक मेरी हैं सब नाकों से सूंघता
सारे हाथ मेरे हैं सब हाथों से कर्म करूं
स्वर्ग मेरा सिर है मेरे पांव पृथ्वी है

भजो राधे कृष्णा भजो राधेश्याम....

चन्द्र और सूरज है दोनों मेरी आंखें
मुख मेरा अग्नि है वायु है मेरा स्वांस
आकाश तो धड़ है सागर है इन्द्रिय
पर्वत है हड्डियां नदियां सब नाड़ियां

भजो राधेकृष्णा भजो राधेश्याम...

वक्षस्थल है धर्म अधर्म पीठ है
काल गति है लीला है गुण प्रवाह
वर्णन विराट का भला कौन कर सके
है बड़ा ही विशाल और आश्चर्यमय
भजो राधेकृष्ण..........

ॐ

अष्टम परिच्छेद

वेदान्तिक सिद्धि

१. निर्गुण गीत

निर्गुणोऽहं निष्कलोऽहं
निर्ममोऽहं निश्चलः
नित्यशुद्ध नित्यबुद्ध
निर्विकारो निष्क्रियः
निर्मलोऽहं केवलोऽहम्
एकमेव अद्वितीय
भासुरोऽहं भास्करोऽहम्
नित्यतृप्त. चिन्मयः
पूर्णकामो पूर्णरूपः

पूर्णकालो पूर्णदिक्
आदि मध्य अन्त हीन
जन्ममरण वर्जित:
सर्वकर्ता सर्वभोक्ता
सर्वव्यापी शिवोऽस्मयहम्
सवव्यापी मद्वयतीतो
नास्ति किंचन काप्यहो।

---

२. वेदान्त गीत

ॐ अन्तरात्मा
नित्य शुद्ध बुद्ध
चिदाकाश कूटस्थ
व्यापक स्वयं ज्योति पूर्ण परब्रह्म
साक्षी द्रष्टा तुरीय
शान्तं शिवं अद्वैतं
अमल विमल अचल
अवाङ्मनोगोचर
आनन्दमय चिदानन्दमय
आनन्दमय चिदानन्दमय
गोपाल नन्दलाल
बंशी बजाने वाला
ॐ अन्तरात्मा......

३. वेदान्त सार गीत

अद्वैत अखण्ड अकर्ता अभोक्ता
असङ्ग असक्त निर्गुण निर्लिप्त
चिदानन्द रूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्
चिदानन्द रूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्

अव्यक्त अनन्त अमृत आनन्द
अचर अमन अक्षर अव्यय
चिदानन्द रूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्
चिदानन्द रूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्

अशब्द अस्पर्श अरूप अगन्ध
अप्राण अमन अतीन्द्रिय अदृश्य:
चिदानन्द रूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्
चिदानन्द रूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्

सत्यं शिवं शुभं सुन्दरं कान्तम्
सच्चिदानन्द सम्पूर्ण सुख शान्तम्
चिदानन्द रूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्
चिदानन्द रूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्

चेतन चैतन्य चिद् घन चिन्मय:
चिदाकाश चिन्मात्र सन्मात्र तन्मय

चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोहम्
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्

अमल विमल निर्मल अचल
अवाङ्मनो गोचर अक्षर निश्चलः

चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्

नित्य निरुपाधिक निरतिशय आनन्द
निराकार ह्रींकार ॐकार कूटस्थ

चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्

पूर्ण परब्रह्म प्रज्ञान आनन्द
साक्षी द्रष्टा तुरीय विज्ञान आनन्द

चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्

सत्यं ज्ञानमनन्तम् आनन्दम्-
सच्चिदानन्द स्वयं ज्योति प्रकाश

चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्

कैवल्य केवल कूटस्थ ब्रह्म
शुद्ध सिद्ध बुद्ध सच्चिदानन्द

चिदानन्द रूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्
चिदानन्द रूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्

निर्दोष निर्मल विमल निरञ्जन
नित्य निराकार निर्गुण निर्विकल्प

चिदानन्द रूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्
चिदानन्द रूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्

आत्मा ब्रह्मस्वरूप चैतन्य पुरुष:
तेजोमयानन्द तत्वमसि लक्ष्य

चिदानन्द रूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्
चिदानन्द रूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्

सोऽहं शिवोऽहं अहं ब्रह्माऽस्मि
शुद्ध सच्चिदानन्द पूर्ण परब्रह्म

चिदानन्द रूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्
चिदानन्द रूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्

ॐ सोऽहं शिवोऽहं अहं ब्रह्मास्मि
सच्चिदानन्द स्वरूपोऽहम्

चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्

"प्रज्ञानं ब्रह्म" "अहम् ब्रह्मास्मि"
"तत् त्वं असि" "अयमात्मा ब्रह्म"

चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्

---

४. ब्रह्मयम् गीत

सर्वं ब्रह्ममयं रे रे सर्वं ब्रह्ममयम्
देहोनाहं जीवोनाहं प्रत्यगभिन्नं ब्रह्मैवाहम्
परिपूर्णोऽहं परमार्थोऽहं ब्रह्मैवाऽहं ब्रह्मोऽहम्
सर्वं ब्रह्ममयं रे रे..........

कि वचनीयं किमवचनीयम्
किं रचनीयं किमरचनीयम्
किं पठनीयं किमपठनीयम्
किं भोक्तव्यं किमभोक्तव्यम्
सर्वं ब्रह्ममयं..........

ब्रह्मैवाऽहं ब्रह्मैवाऽहं ब्रह्मैवाऽहं ब्रह्मोऽहम्

शिवैवाऽहं शिवैवाऽहं शिवैवाहं शिवोऽहम्

सर्वं ब्रह्ममयं जगत् सर्वं ब्रह्ममयम्

सर्वं राममयं जगत् सर्वं राममयम्

सर्वं कृष्णमयं जगत् सर्वं कृष्णमयम्

सर्वं शिवमयं जगत् सर्वं शिवमयम्

सर्वं खल्विदं ब्रह्म नेह नानास्ति किंचन

सर्वं ब्रह्ममयं..........

माता पिता ब्रह्मं

लड़का लड़की ब्रह्मं

दूध दही ब्रह्मं

चन्दन पुष्पं ब्रह्मं

गरमागरम चाय ब्रह्मं

ठण्डाई लैमोनेड ब्रह्मं

सर्वं ब्रह्ममयं..........

फैशन स्टाइल ब्रह्मं

न्याय अन्याय ब्रह्मं

गाने वाला ब्रह्मं

सुनने वाला ब्रह्मं

हारमोनियम् वाला ब्रह्मं
तबला वाला ब्रह्मं

सर्वं ब्रह्म मयं.......

---

५. आनन्द लहरी

ॐ आनन्दम् ब्रह्मानन्दम्
ॐ आनन्दम् ब्रह्मानन्दम् आनन्दम् ब्रह्मानन्दम्
ॐ आनन्दम् ब्रह्मानन्दम् चिदानन्दम् ब्रह्मानन्दम्
ॐ निजानन्दम् नित्यानन्दम् परमानन्दम् शिवानन्दम्
अखण्डानन्दम् आत्मानन्दम् पूर्णानन्दम् सदानन्दम्
कृष्णानन्दम् रामानन्दम् अमृतानन्दम् शुद्धानन्दम्
अनन्तानन्दम् असङ्गानन्दम् अमलानन्दम् विमलानन्दम्
शान्तानन्दम् सर्वानन्दम् स्वरूपानन्दम् तुरीयानन्दम्
केवलानन्दम् कैवल्यानन्दम् महानन्दम् शाश्वतानन्दम्
अचलानन्दम् अजरानन्दम् अमरानन्दम् ज्ञानानन्दम् ।

---

६. विभूतियोग का गीत

भजो राधेकृष्ण भजो राधेश्याम
सोऽहं सोऽहं सोऽहं शिवोऽहम्

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

मन और देह नहीं हूं मैं हूं अमर आत्मा
साक्षी तीनों दशाओं का हूं परम चेतना

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ......

मैं गन्ध चंवेली में सौन्दर्य फूलों में
बरफ़ में ठण्डक हूं काफी में मेहक हूं

भजो राधेकृष्ण.........

हरियाली हूं पत्ती में रङ्ग इन्द्र धनुष में
जिह्वा में रसना हूं रस हूं नारङ्गी में

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ............

हूं सारे मनों का मन प्राणों का प्राण मैं
जीवों का जीव हूं आत्माओं की आत्मा

भजो राधे कृष्ण.........

भूतों में आत्मा हूं तारा हूं आंखों का
सूर्यों का सूर्य हूं ज्योतियों की ज्योति

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ..........

वेदों का प्रणव हूं ब्रह्मन् उपनिषदों का
जङ्गल में शान्ति हूं बादल में गरज हूं।

भजो राधे कृष्ण.........

विद्युत्कण में हूं वेग गति हूं विज्ञान में
सूरज में तेज हूं लहर रेडियो की

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ.........

आधार जगत का हूं इस देह की आत्मा
कानों का कान हूं आंखों की आंख हूं।

भजो राधे कृष्ण..........

हूं काल देश दिशा और इनका नियन्ता
देवों का देव हूं गुरु और संचालक

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ.........

सङ्गीत में लय हूं राग और रागिनी में
आकाश में हूं शब्द और शक्ति वीर्य में

भजो राधेकृष्ण..........

मैं हूं बिजली में शक्ति और मन में बुद्धि हूं
अग्नि में चमक हूं यतियों में तपस्या

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ.........

दार्शनिकों में विचार, इच्छा हूं ज्ञानियों में
भक्तों में प्रेम हूं समाधि हूं योगी में

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ······

वोही तो हूं सोऽहम् हूं वोही हूं
मैं ही तो सोऽहं हूं और वो भी मैं ही हूं

भजो राधे कृष्णा ······

उपनिषदों की विद्या

१. उपनिषद् गीत

हे रामचन्द्र वृन्दावन चन्द
एकोदेव सर्वभूतेषु गूढ़:
सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा
कर्माध्यक्षः सर्व भूताधिवास
साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च
एको देव सर्व भूतेषु गूढ़:

सोऽहं शिवोऽहं शिवः केवलोऽहम्
शम्भो शङ्कर हे महादेव
ईश्वर एक है ब्रह्म है एक

छिपा हुआ है सब प्राणियों में
ज्यों दूध में मक्खन—लकड़ी में अग्नि
मस्तिष्क में मन—ज्यों बीज में तेल
घट घट व्यापी सब जीवों का आत्मा

एको देवः सर्व भूतेषु गूढ़ः

सत्येन लभ्य तपसा ह्येष आत्मा
सम्यग् ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्
अन्तःशरीरे ज्योतिर्मयोहि शुभ्रः
यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः

एको देवः सर्व भूतेषु गूढ़ः

तप सत्य के अभ्यास से मिलता ये आत्मा
निर्विकल्प समाधि से ब्रह्मचर्य से
देह के अन्दर, ज्योतिर्मय शुद्ध आत्मा
निर्दोष तापस करें इसका दर्शन

एको देव सर्व भूतेपु गूढ़ः

सत्यम् ज्ञानम् अनन्तम् ब्रह्म
पुरुषोत्तम परमात्मा
अदृष्टं अव्यवहार्यं अग्राह्यं अलक्षणम्
अचिन्त्यं अव्यपदेश्यं शांन्तं अद्वैतम्

एको देवः सर्व भूतेपु गूढ़ः

२. चिदानन्द गीत

चिदानन्द चिदानन्द चिदानन्द हूं
हर हाल में अलमस्त सच्चिदानन्द हूं
अजरानन्द अमरानन्द अचलानन्द हूं
हर हाल में अलमस्त सच्चिदानन्द हूं

अन्तरा

शिवानन्द शिवानन्द शिवानन्द हूं
अगड़बं वाला अगड़बं वाला अखिलानन्द हूं
निजानन्द निजानन्द निजानन्द हूं
हर हाल में अलमस्त सच्चिदानन्द हूं।
निर्भय और निश्चिन्त चिद्घनानन्द हूं
कैवल्य केवल कूटस्थ आनन्द हूं
नित्य-शुद्ध सिद्ध सच्चिदानन्द हूं
चिदानन्द चिदानन्द चिदानन्द हूं
हर हाल में अलमस्त सच्चिदानन्द हूं

---

३. आनन्द गीत

आनन्दोऽहम् आनन्दोऽहम् आनन्दं ब्रह्मानन्दम्
सचराचर परिपूर्ण शिवोऽहम्

सहजानन्द स्वरूप शिवोऽहम्
व्यापक चेतन आत्म शिवोऽहम्
व्यक्ताव्यक्त स्वरूप शिवोऽहम्
नित्य शुद्ध निरामय सोऽहम्
नित्यानन्द निरञ्जन सोऽहम्
अखण्ड एक रस चिन्मात्रोऽहम्
भूमानन्द स्वरूप शिवोऽहम्
असङ्गोऽहम् अद्वैतोऽहम्
विज्ञानघन चैतन्योऽहम्
निराकार निर्गुण चिन्मयोऽहम्
शुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूपोऽहम्
असङ्ग स्वप्रकाश निर्मलोऽहम्
निर्विशेष चिन्मात्र केवलोऽहम्
साक्षी चेतन कूटस्थोऽहम्
नित्यमुक्त स्वरूप शिवोऽहम्
आनन्दोऽहम् आनन्दोऽहम्...

ईश वास्य गीत

ईशावास्यमिदं सर्वम्
भगवान बसा है सब जग में

नामों और रूपों को त्यागो—ब्रह्मानन्द में मग्न हो
पराये धन का मत लोभ करो
अहंकार को त्यागो—मिलेगी परम शान्ति
निष्काम भाव से कर्म करो
सौ वरस तक जीते रहो—निष्काम कर्म ना तुम को लगें
एक है ब्रह्म और अचल
दूर भी वह समीप भी, सब जीवों के अन्दर बाहर
सर्व व्यापी है ज्योतिष्मान्
ब्रह्म अकाय व्रणरहित स्नायुहीन भी है वह
शुद्ध स्वरूप है पाप रहित
सब जीवों में उसको जो जानता तरता वह शोक मोह को
शुद्ध ब्रह्म की पूजा करो
उपासना अविद्या की जो करें गिरते हैं अंधकार में
पूजा सम्भूति की जो करें गिरते हैं अंधकार में।

ईशावास्यमिदं सर्वम्

———

५. केनोपनिषत् गीत

सीताराम सीताराम सीताराम राम राम
राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम श्याम श्याम

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

ब्रह्म अविनाशी, स्वयं ज्योति, साक्षी
सर्वव्यापी, जन्म मरण हीन
नित्य, विकारहीन, आनन्दपूर्ण
आधार उद्भव हर एक वस्तु का
इन्द्रियों द्वारा नहीं जाना जावे
ब्रह्म को अन्तर्ज्ञान से पाओ
मन इन्द्रियों की गति नहीं उस तक
मन का वह मन है, आंखों का चक्षु
जो जानते हैं दुर्लभ है उनको
होता सुलभ उनको जो नहीं जानें
मन वाक् चक्षु नहीं पहुंचें उस तक
ज्ञात और अज्ञात से दूर ब्रह्मन्
चर्म चक्षु से जो नहीं देखा जावे

जिसकी शक्ति द्वारा देखतीं आंखें
केवल उसी को तुम ब्रह्म जानो
यह नहीं, जिसको यहां दुनियां पूजे
जाने से ब्रह्म को, सच्चा है जीवन
उसको नहीं जानो, है बड़ी हानि
एक आत्मा सब जीवों में ज्ञानी देखें
भौतिक जीवन तरते बनते अमर वह

---

६. कठोपनिषत् गीत

अच्युत केशव माधव गोविन्द नारायण
वासुदेव हरि विष्णु जनार्दन मधुसूदन
शम्भो शङ्कर हर हर महादेव सदाशिव
नील कण्ठ नटराज विश्वनाथ
इन्द्रिय निग्रह करके जो तप और श्रद्धा का अभ्यास करे
अन्तर हृदय वासी ब्रह्म को पाता है वह अविनाशी को
है ब्रह्म प्रकाशक, रूपरहित, बाहर भी है अन्दर भी
अद्वितीय नित्य है सर्वव्यापक अव्यय
उससे बने हैं महासागर, पर्वत पहाड़ और सब नदी
उससे निकले वेद साम ऋग और यजुर्वेद अथर्वण
एष सर्वेषु भूतेषु गूढाऽऽत्मा न प्रकाशते
दृश्यते त्वग्रया बुद्धया सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः

सारे जीवो में छिप रहा, प्रकट ना होवे आत्मा
तत्व दर्शी मुनि देखें इसको अपनी सूक्ष्म बुद्धि से
पराञ्चिखानि व्यतृणत्स्वयम्भू
तस्मात्पराङ् पश्यति नाऽऽन्तरात्मन्
इन्द्रियां रचीं स्वयम्भूने बाहर जाने वाली वृत्ति से
बाहर की दुनियां देखे मनुष्य आत्मा को नहीं देखता
कश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षत्
आवृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन् ।
किन्तु ज्ञानी कोई विषयों से, दृष्टि को अपनी ओर खेंचकर
देखता अन्तरात्मा को मोक्ष पाने की इच्छा से
न तत्र सूर्यो भांति न चन्द्र तारकं
नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः .
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं
तस्य भासा सर्व मिदं विभाति ।
सूर्य वहां ना प्रकाश करे चन्द्र और तारे नहीं अग्नि
प्रकाश ब्रह्म जब करें, ज्योति से उसकी सब जगें ।

ॐ

दशम परिच्छेद

प्रेरक ध्वनियां

१. शिव ध्वनि

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय

शिवाय नमः ॐ शिवाय नमः

शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय

शिव शिव शिव शिव शिवाय नमः ॐ

हर हर हर हर नमः शिवाय

शिव शिव शिव शिव शिवाय नमः ॐ

बं बं बं बं नमः शिवाय

शिव साम्ब सदा शिवं साम्ब सदा शिव

साम्ब सदा शिव साम्ब शिव

शिव शिव शङ्कर हर हर शङ्कर
जय जय शङ्कर नमामि शङ्कर
ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय
ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय

महादेव शिव शङ्कर शम्भो उमाकांत हर त्रिपुरारि
मृत्युञ्जय वृषभध्वज शूलिन् गङ्गाधर मृड मदनारि
हर शिव शङ्कर गौरीशं वन्दे गङ्गाधरमीशम्
रुद्रं पशुपतिमीशानं कलये काशीपुरीनाथम्
जय शम्भो जय शम्भो शिव गौरी शङ्कर जय शम्भो
जय शम्भो जय शम्भो शिव गौरी शङ्कर जय शम्भो

शिव शिवेति शिवेति शिवेति वा
हर हरेति हरेति हरेति वा
भव भवेति भवेति भवेति वा
मृड मृडेति मृडेति मृडेति वा
भज मनः शिवमेव निरन्तरम्

ॐ शिव ॐ शिव ॐकार शिव
उमा महेश्वर तव चरणम्

नमामि शङ्कर भवानी शङ्कर
गिरिजा शङ्कर तव शरणम्
भवानी शङ्कर मृडानी शङ्कर
परात्परा शिव तव चरणम्
गौरी शङ्कर मृडानी शङ्कर
शम्भो शङ्कर तव चरणम्

जय शिव शङ्कर हर त्रिपुरारि
महादेव शम्भो पिनाकधारी
जय शिव शङ्कर हर त्रिपुरारि
उमाकान्त शम्भो पिनाकधारी
जय शिव शङ्कर हर त्रिपुरारि
पाहि पशुपति पिनाकधारी
जय शिव शङ्कर जय असुरारि
जय गङ्गाधर जय मदनारि
जय मुरलीधर जय असुरारि
जय मन मोहन कुञ्ज बिहारी

ॐ शिव हर हर गङ्गा हर हर
ॐ शिव हर हर गङ्गा हर हर

ॐ शिव हर हर ॐ शिव हर हर
बं बं हर हर ॐ शिव हर हर

हर हर शिव शिव	सर्वेश
सच्चिदानन्द	सर्वेश
शम्भो शङ्कर	सर्वेश
सर्वभूताधिवास	सर्वेश
हरि नारायण	सर्वेश
आनन्दात्मक	सर्वेश
सर्वान्तरात्मा	सर्वेश
हरि गोविन्द	सर्वेश
केशव माधव	सर्वेश
सर्वान्तर्यामी	सर्वेश
अखण्ड अद्वैत	सर्वेश
व्यापक परिपूर्ण	सर्वेश

भोले भाले विश्वनाथ	लाखों प्रणाम
बं बं बं भोलानाथ	बं बं बं भोलानाथ
लाखों प्रणाम प्यारे	करोड़ों प्रणाम
मोहन जटा वाले	तुम को लाखों प्रणाम

तुम को लाखों प्रणाम प्यारे किरोड़ों प्रणाम
शङ्कर भोले भाले तुम को लाखों प्रणाम
तुम को लाखों प्रणाम प्यारे किरोड़ों प्रणाम

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहिमाम्
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्षमाम्
चन्द्रशेखर पाहिमाम्
चन्द्रशेखर रक्षमाम्
चन्द्रशेखर त्राहिमाम्

हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे
विश्वनाथ गंगे काशी विश्वनाथ गंगे
हर हर महादेव ....

गङ्गाधर हर गङ्गाधर हर
गङ्गाधर हर गङ्गाधर हर

जय शम्भो जय शम्भो शिव गौरी शङ्कर जय शम्भो
जय शम्भो जय शम्भो शिव गौरी शङ्कर कैलासपति
जय गौरी जय गौरी गौरी जय शक्ति पार्वती

अगड़ बं अगड़ बं बाजे डमरू
नाचे सदाशिव जगद्गुरू
नाचे ब्रह्मा नाचे विष्णु नाचे महादेव .
खप्पर लेके काली नाचे नाचे आदि देव
अगड़ बं..............

[तर्ज—हरे रामा]

गौरी शङ्कर गौरी शङ्कर शङ्कर शङ्कर गौरी गौरी
गङ्गा शङ्कर गङ्गा शङ्कर शङ्कर शङ्कर गङ्गा गङ्गा
शम्भो शङ्कर शम्भो शङ्कर शङ्कर शङ्कर शम्भो शम्भो
उमाशङ्कर उमाशङ्कर शङ्कर शङ्कर उमा उमा

बोल शङ्कर बोल शङ्कर शङ्कर शङ्कर बोल
हर हर हर हर महादेव शम्भो शङ्कर बोल
बोल शङ्कर बोल शङ्कर शङ्कर शङ्कर बोल
शिव शिव शिव शिव सदाशिव शम्भो शङ्कर बोल

जय जय शङ्कर कैलासपति जय जय उमापति महादेव

काशी विश्वनाथ सदाशिव बं बोलो कैलासपति
बं बोलो कैलास पति

नटराज नटराज नर्तन सुन्दर नटराज
शिवराज शिवराज शिवकामी प्रिय शिवराज

नील कण्ठ सदा शिव—नटराज सुन्दरेश

गुह मुरुहषण्मुख उडुपी सुब्रह्मण्य
तिरु चेन्दुर वेल कतिर कामनाथ
दैवनै समेत पलनिमलई आण्डव

ॐ शिव ॐ शिव शिव शिव ॐ ॐ
ॐ हरि ॐ हरि हरि हरि ॐ ॐ

दीनबन्धु दीननाथ विश्वनाथ हे विभो
पाहिमाम् त्राहिमाम् प्राणनाथ हे प्रभो
रक्षमाम् त्राहिमाम् प्राणनाथ हे प्रभो

शङ्करने शङ्करने शम्भो गङ्गाधरने

जय गणेश जय गणेश जय गणेश गं
नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय वं

शिव शङ्कर हर शङ्कर जय शंङ्कर पाहि
नमः शङ्कर उमाशङ्कर जटा शङ्कर पाहि

हर हर शिव शिव शम्भो
शङ्कर शङ्कर शम्भो
हर हर शिव शिव हर हर शम्भो
शिव शिव शम्भो
शङ्कर शम्भो
हर हर शिव शिव शम्भो ......

ॐ शिव ॐ शिव ॐ शिव ॐ
ॐ शिव ॐ शिव ॐ शिव ॐ
ॐ हर ॐ हर ॐ हर ॐ
ॐ हर ॐ हर ॐ हर वं
ॐ हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ
ॐ हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ
जय जय शङ्कर नमामि शङ्कर
शिव शङ्कर शङ्कर शम्भो
शिव शिव शङ्कर हर हर शङ्कर
शम्भो शङ्कर महादेव

शङ्कर शङ्कर जय महादेव
शङ्कर शङ्कर जय सदाशिव
शङ्कर शङ्कर जय परमेश्वर
शङ्कर शङ्कर जय हरोहर
शम्भो शङ्कर हर सदा शिव
शम्भो शङ्कर हर सदा शिव
उमा शङ्कर हर महादेव
गौरी शङ्कर हर हरोहर

गौरी रमण करुणाभरण
पाहि कृपा पूर्ण शरण

ॐ शरवणभव शरवणभव शरवणभव पाहिमाम्
ॐ वेलमुरुह वेलमुरुह वेलमुरुह रक्षमाम्
ॐ सुब्रह्मण्य सुब्रह्मण्य सुब्रह्मण्य पाहिमाम
ॐ वेलमुरुह वेलमुरुह वेलमुरुह रक्षमाम

शम्भो शङ्कर शम्भो शङ्कर शङ्कर, शम्भो शङ्कर महादेव
शम्भो शङ्कर शम्भो शङ्कर शङ्कर, शम्भो शङ्कर सदाशिव
बं बं बं बं महादेव
हर हर हर हर सदाशिव

शिव शम्भो सदाशिव शम्भो सदाशिव
शम्भो सदा शिव वं वं वं
शङ्कर शिव शङ्कर शिव शङ्कर शिव शङ्कर
शङ्कर शिव शङ्कर शिव शङ्कर शिव शङ्कर

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते
नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते
नमस्ते नमस्ते तपो योग गम्य
नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञान गम्य

साम्ब सदाशिव साम्ब सदा शिव
साम्ब सदा शिव साम्ब शिव
साम्ब सदाशिव साम्ब सदाशिव
शम्भो महादेव साम्बशिव
शम्भो शङ्कर शम्भो शङ्कर
शम्भो शङ्कर साम्बशिव

शम्भो सदाशिव शम्भो सदाशिव शम्भो सदाशिव वं वं वं
शम्भो शङ्कर हर शम्भो शङ्कर हर शम्भो शङ्कर हर महादेव
गौरी शङ्कर हर गौरी शङ्कर हर गौरी शङ्कर हर सदाशिव

शम्भो शंकर गौरीश शान्त दयापर विश्वेश
शम्भो शंकर गौरीश शिव साम्ब शंकर गौरीश

साम्ब सदाशिव साम्ब सदाशिव साम्ब सदाशिव शम्भो शिव हर

कैलास पति नमोऽस्तुते
किरातमूर्ति नमोऽस्तुते
नन्दिवाहन नमोऽस्तुते
पन्नगभूषण नमोऽस्तुते
त्रिपुरान्तक नमोऽस्तुते
त्रिशूल पाणि नमोऽस्तुते
चन्द्रशेखर नमोऽस्तुते
शम्भो शंकर नमोऽस्तुते
भक्त रक्षक नमोऽस्तुते
गंगाधर नमोऽस्तुते

जय काम दहन नमोऽस्तुते
जय काशीनाथ नमोऽस्तुते
जय नीलकण्ठ नमोऽस्तुते
जय पिनाकधारी नमोऽस्तुते
जय त्रिलोचन मूर्ति नमोऽस्तुते
जय त्रिभुवन पाल नमोऽस्तुते
जय चिदम्बरेश नमोऽस्तुते
जय साम्ब सदाशिव नमोऽस्तुते
जय भस्मधारी नमोऽस्तुते
जय गौरी वल्लभ नमोस्तुते

जय जय आरती गौरी मनोहर
गौरी मनोहर भवानी शंकर
साम्ब सदाशिव उमामहेश्वर
जय जय आरती······

श्रीराम ध्वनियाँ

(१) राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम

(२) ॐ रामाय नमः ॐ रामाय नमः
रामाय नमः ॐ नमो रामाय

(३) श्रीराम रघुराम परंधाम बलभीम
श्रीराम राम रघुराम राम परंधाम राम बलभी

(४) रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
जय रघुनन्दन जय सियाराम
जानकी वल्लभ सीताराम
राम राम जय राजाराम
राम राम जय सीताराम

(५) ॐ श्रीराम जय राम जय जय राम
ॐ श्रीराम जय राम जय जय राम

(६) जय सियाराम जय जय सियाराम
जय राधेश्याम जय जय राधेश्याम
जय हनुमान जय जय हनुमान
जय सियाराम जय जय सियाराम

(७) जय सियाराम जय जय सियाराम जय
जय सियाराम जय जय सियाराम
जय सियाराम जय जय सियाराम जय
जय सियाराम जय सियाराम
जय सियाराम जय जय सियाराम जय
जय सियाराम जय राम राम राम
सियाराम सियाराम सियाराम जय
सियाराम जय हनुमान जय,
जय हनुमान जय, जय हनुमान जय वीर बली

) राम राम राम सीता राम राम राम राम सीता
राम राम राम सीता, राम राम राम राम सीता

) राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम नाम तारकम्
राम कृष्ण वासुदेव भक्ति मुक्ति दायकम्
जानकी मनोहरम् सर्वलोक नायकम्
शंकरादि सेव्यमान पुण्यनाम कीर्तनम्

) राम राम राम राम राम
राम राम राम राम
राम राम जय जय राम
राम राम सीताराम
राम राम राम राम राम—राम राम सीतारा

(११) राम राम सियावर रामा
श्याम श्याम श्याम राधेश्याम
राम राम राम राम, राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम, राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम—राम राम राम राम
राम राम राम राम—राम राम राम राम

(१२) गोविन्द राम गोपाल राम
जानकी राम कौसल्याराम

(१३) राम सीता राम सीता राम सीता राम सीता
राम सीता राम सीता राम सीता राम सीता

(१४) राम सीता राम सीता राम सीता राम सीता

(१५) हे राम सीताराम जय राम राम राम
राम राम राम राम राम राम सीताराम

(१६) सीताराम भजो सीताराम -सीताराम भजो सीताराम

(१७) श्रीराम सीताराम जय राम जय जय राम

(१८) श्रीराम नाम जपो कभी ना भूलो
श्रीराम नाम रटो कभी ना भूलो
राम राम श्री सीताराम राम राम श्री सीताराम
राम राम श्री सीताराम राम राम श्री सीताराम
राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

(१६) हे राम सीताराम जय राम राम राम
राम राम सीताराम
राजाराम राम राम
राम राम सीताराम

(२०) जय जय सियाराम जय जय श्री सीताराम
राम श्री राम राम श्री राम
राम श्री राम राम राम सीता राम

(२१) जपो राम राम राम राम—राम राम राम राम
राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम

(२२) राम राम सीताराम हे सियाराम
सच्चिदानन्द ब्रह्मे अनन्त ज्योतिये
चिदानन्द राम ब्रह्मे शान्ति स्वरूपमे
चिदानन्द राम ब्रह्मे तृप्तिस्वरूपमे
चिदानन्द राम ब्रह्मे अमृतस्वरूपमे
सत्यं अद्वैत वस्तुवे ज्ञानस्वरूपमे
राम राम राम रमापति राम राम
रमापति राम राम सीतापति राम राम

(२४) सीता राम राम राम राम
जय जय राम राम राम राम
जानकीराम राम राम राम
जय शारङ्गधर जय असुरारि
जय मन मोहन राम खरारि
जय जय राम—सियावर राम

(२५) सीता समेत भजो आनन्द दाता भजो
जय जय रघुनाथ भजो जय दीन दयाल भजो

(२६) पिता रघुवर माता रघुवर
भ्राता सखा प्रभु गुरु तात रघुवर

(२७) सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम
जय सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम

(२८) सीताराम भजो सीताराम गौरीशंकर राधेश्याम
सीताराम भजो सीताराम गिरिजा शम्भो माधव श्याम
सीताराम भजो सीताराम सीताराम भजो सीताराम
सीताराम भजो सीताराम सीताराम भजो सीताराम

(२९) पतित जनको करो पुनीता हे राम सीता हे राम सीता
रामं वन्दे दशरथ बालं सीतानायक रघुकुल तिलकम्
कृष्णां वन्दे नन्द कुमारं राधावल्लभ नन्द किशोरम्

(३०) बोलो राम सीता राम सीता राम सीता राम राम
राम सीता राम सीता राम सीता राम राम
बोलो हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

(३१) श्रीराम सीताराम
जय राम जय जय राम

(३२) सी.........ता.........राम
सीता राम राम राम
जय सीताराम जय, जय सीताराम जय

(३३) राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम

(३४) राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम

(३५) राम राम नमोऽस्तुते जय रामचन्द्र नमोऽस्तुते
रामभद्र नमोऽस्तुते जय राघवाय नमोस्तुते
देव देव नमोऽस्तुते जय देव राज नमोऽस्तुते
वासुदेव नमोऽस्तुते जय वीरराज नमोऽस्तुते
रावणारि नमोऽस्तुते जय भव्यमूर्ति नमोऽस्तुते
भक्तपाल नमोऽस्तुते जय सार्वभौम नमोऽस्तुते

श्रीधराय नमोऽस्तुते   जय श्रीकराय नमोऽस्तुते
श्रीनिवास नमोऽस्तुते   जय शान्तमूर्ति नमोऽस्तुते
अप्रमेय नमोऽस्तुते   जय विक्रमाय नमोऽस्तुते
माधवाय नमोऽस्तुते   जय लोक बन्धु नमोऽस्तुते

(३६) राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम
राम राम राम राम

(३७) राम हरि सिया राम राम
राम हरि सिया राम राम
राम हरि सिया राम राम
राम हरि सिया राम राम

(३८) राम राम राम राम, जय सीताराम, जय जय सियाराम

(३९) राघव रघु राघवरघु राघवरघु राघव
राघवरघु राघवरघु राघवरघु राघव

(४०) जय जय सीताराम रमापति जय जय सियाराम राम

(४१) राम राघव राम राघव राम राघव पाहिमाम्
राम राघव राम राघव राम राघव रक्षमाम्

(४२) जयराम जय राम राम जय राम जय श्रीराम
जय सीते जय सीते सीते जय सीते जय श्री सीते

(४३) राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

(४४) रघुपति राघव राम राम
पतित पावन राम राम
जन मन रञ्जन राम राम
पाप विमोचन राम राम
अनाथ रक्षक राम राम
आपद् बान्धव राम राम
भवभय भञ्जन राम राम
करुणा सागर राम राम
भक्त वत्सल राम राम
मुक्ति प्रदायक राम राम

देवी कीर्तन ध्वनियाँ

(१) ॐ नमो भगवती राधा रुक्मिणी
ॐ नमो भगवती सीता जानकी
ॐ नमो भगवती गङ्गा महाराणी

ॐ नमो भगवती भागीरथी
ॐ नमो भगवती चण्डी चामुण्डी
ॐ नमो भगवती दुर्गा काली
ॐ नमो भगवती राज राजेश्वरी
ॐ नमो भगवती त्रिपुर सुन्दरी
ॐ नमो भगवती उमा पार्वती
ॐ नमो भगवती गौरी ईश्वरी
ॐ नमो भगवती महालक्ष्मी
ॐ नमो भगवती महाकाली
ॐ नमो भगवती पराशक्ति
ॐ नमो भगवती कुण्डलिनी शक्ति
ॐ नमो भगवती मूल प्रकृति
ॐ नमो भगवती सर्व विकृति
ॐ नमो भगवती आदि माया
ॐ नमो भगवती महामाया
ॐ नमो भगवती तारा ललितायै
ॐ नमो भगवती अम्बाल अम्बिकायै
ॐ नमो भगवती अखिलांडेश्वरी
ॐ नमो भगवती शिवकामी सुन्दरी
ॐ नमो भगवती अन्नपूर्णी
ॐ नमो भगवती वल्ली दैवनै

ॐ नमो भगवती मूकाम्बी देवी
ॐ नमो भगवती वाणी सरस्वती
ॐ नमो भगवती कञ्ची कामाक्षी
ॐ नमो भगवती काशी विशालाक्षी
ॐ नमो भगवती मधुर मीनाक्षी
ॐ नमो भगवती अज्ञान नाशिनी
ॐ नमो भगवती दरिद्र नाशिनी
ॐ नमो भगवती जगज्जननी
ॐ नमो भगवती दुःख ध्वंसिनी
ॐ नमो भगवती महिषासुर मर्दिनी
ॐ नमो भगवती शुम्भ निशुम्भ मर्दिनी
ॐ नमो भगवती शारदा गायत्री
ॐ नमो भगवती भवानी सावित्री

दीन धारिणी दुरित हारिणी
सत्वरजस्तम त्रिगुण धारिणी
सगुनी अष्टांगी अनिर्वचनी
सन्ध्या सावित्री सरस्वती गायत्री
रुक्मिणी जानकी पङ्कज लक्ष्मी
अम्बाल अम्बिका भगवती भवानी
चंडी चामुण्डी गौरी गंगे

उमा पार्वती भवानी शंकरी
राज राजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी
अखिलाण्डेश्वरी शिवकामी सुन्दरी
देवी शक्ति श्री जगतधात्री
श्रीकामेश्वरी मूकाम्बी देवी
श्री जगदम्बा ललिता देवी
श्रीभद्रकाली तारा देवी
अष्ट लक्ष्मी नव दुर्गा

जय गंगे जय गंगेरानी जय गंगे जय हर गंगे
जय गौरी जय गौरी गौरी जय गौरी जय पार्वती
जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्री राधे
जय सीते जय सीते सीते जय सीते जय श्री सीते
गौरी गौरी गंगे राजेश्वरी
गौरी गौरी गंगे भुवनेश्वरी
गौरी गौरी गंगे महेश्वरी
गौरी गौरी गंगे मातेश्वरी
गौरी गौरी गंगे महाकाली
गौरी गौरी गंगे महालक्ष्मी
गौरी गौरी गंगे पार्वती
गौरी गौरी गंगे सरस्वती

ॐ शान्ति ॐ शान्ति ॐ शान्ति ॐ

ब्रह्म शक्ति, विष्णु शक्ति, शिव शक्ति ॐ
आदि शक्ति, महा शक्ति, पराशक्ति ॐ

(६) जय ललिते श्री ललिते त्रिपुर सुन्दरी जय ललिते
जय गौरी श्री गौरी राज राजेश्वरी जय गौरी

(७) जय श्री दुर्गे जय श्री दुर्गे जय श्री दुर्गे पाहिमाम्
जय श्री दुर्गे जय श्री दुर्गे जय श्री दुर्गे रक्षमाम्
जय श्री दुर्गा जय श्री दुर्गा जय श्री दुर्गा नमः ॐ
जय श्री दुर्गा जय श्री दुर्गा जय श्री दुर्गा शरणं ॐ

(८) जय सरस्वती जय सरस्वती जय सरस्वती पाहिमाम्
जय सरस्वती जय सरस्वती जय सरस्वती रक्षमाम्
जय सरस्वती जय सरस्वती जय सरस्वती नमः ॐ
जय सरस्वती जय सरस्वती जय सरस्वती शरणम् ॐ

(९) ॐ शक्ति ॐ शक्ति ॐ शक्ति पाहिमाम्
ॐ शक्ति ॐ शक्ति ॐ शक्ति रक्षमाम्

हरिनाम ध्वनियां

(१) जय गणेश जय गणेश जय गणेश पाहिमाम्
श्रीगणेश श्रीगणेश श्रीगणेश रक्षमाम् ।
जय गुरु शिव गुरु हरि गुरु राम
जगद्गुरु परमगुरु सतगुरु श्याम ।
चिद्गुरु चिन्मयगुरु मौनगुरु राम
अस्मतगुरु आर्यगुरु आनन्द गुरु श्याम
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

(२) भजमन नारायण नारायण नारायण
श्रीमन् नारायण नारायण नारायण
बद्री नारायण नारायण नारायण
हरि ॐ नारायण नारायण नारायण
हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ
हरि बोल हरि बोल हरि बोल हरि बोल
भजमन नारायण.........

(३) नारायण नारायण जय गोविन्द हरे
नारायण नारायण जय गोपाल हरे

(४) गोविन्द हरे गोपाल हरे
जय जय प्रभु दीन दयाल हरे

(५) हरि नारायण हरि नारायण
हरि नारायण हरि नारायण

(६) हरे मुरारे मधुकैटभारे
गोपाल गोविन्द मुकुन्द शौरे

(७) हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ ॐ
सीताराम राधेश्याम हरि ॐ ॐ

८) कृष्णानन्द मुकुन्द मुरारे वामन माधव गोविन्द
श्रीधर केशव राघव विष्णो लक्ष्मीनायक नरसिंह

९) कृष्णानन्द मुकुन्द मुरारे वामन माधव गोविन्द
गोविन्द गोविन्द गोविन्द गोविन्द
कृष्णाराम गोविन्द रामकृष्ण गोविन्द
केशव माधव गोविन्द हरि हरि हरि हरि गोविन्द

०) बोल हरि बोल हरि बोल हरि बोल
श्रीराधेकृष्ण गोविन्द गोपाल हरि बोल

१) हरि बोलो भाई हरि बोलो भाई
हरि बोलो भाई हरि बोलो भाई

२) हरि हरि बोल बोल हरि बोल
मुकुन्द माधव गोविन्द बोल
हरि हरि बोल बोल हरि बोल

वाहगुरु बोल सतनाम बोल
मुकुन्द माधव गोविन्द बोल
हरि हरि बोल......

(१३) बोल हरि बोल हरि बोल हरि बोल
केशव माधव गोविन्द बोल

(१४) हरि ॐ नारायण जय शिव राम
सीताराम जय राधेश्याम
जय जय विष्णु गुरुड़ भगवान
जय जय मीरा भक्त सुजान
जय जय अर्जुन भक्त सुजान
जय जय पीपा भक्त सुजान
जय जय तुलसीदास भक्त सुजान
हरि ॐ नारायण

(१५) जय जय राम कृष्ण वासुदेव नारायण हरि
जय जय नारायण हरि
जय जय नारायण हरि

(१६) राम राम राम, राम राम सीताराम
सीताराम राधेश्याम, हरे कृष्ण हरे राम
राम राम राम, राम राम राम राम सीतार
कृष्ण स्वामी अन्तर्यामी सर्व शक्तिमान्

नित्य शुद्ध सिद्ध बुद्ध सच्चिदानन्द
नारायण वासुदेव मुकुन्द मुरारी
हृषिकेश पद्मनाभ माधव गोविन्द
दामोदर श्रीनिवास मधुसूदन
सीताराम राधेश्याम श्रीधर त्रिविक्रम
राम राम राम..........

हरि ॐ राम राम हरि ॐ राम
हरि ॐ राम सीता हरि ॐ राम

जय जय राम कृष्ण हरि जय जय राम कृष्ण हरि
जय जय राम कृष्ण हरि जय जय राम कृष्ण हरि

विट्ठल विट्ठल विट्ठल विट्ठल
जय जय विट्ठल जय जय विट्ठल
जय जय विट्ठल पांडुरङ्ग विट्ठल
जय जय विट्ठल जय हरि विट्ठल
जय जय विट्ठल पण्ढरीनाथ विट्ठल
विट्ठल विट्ठल विट्ठल विट्ठल
विट्ठल विट्ठल जय जय विट्ठल
जय हरि विट्ठल पाण्डुरङ्ग
जय जय विट्ठल पाण्डुरङ्ग

(२०) गौर हरि जय गौर हरि
जय सच्चिदानन्द गौर हरि
राम हरि जय राम हरि
जय सच्चिदानन्द कृष्ण हरि
जय जय गोपाल मुकुन्द हरि
घनश्याम हरि ………

(२१) गौर गौर गौर गौर गौर गौर गौर हे
गौर गौर गौर गौर गौर गौर गौर हे
गौर गौर गौर गौर गौर गौर पाहिमाम्
गौर गौर गौर गौर गौर गौर रक्षमाम्
गौर गौर पाहिमाम् गौर गौर त्राहिमाम्

(२२) नारायण नारायण नर हरि हरि हरि नारायण
नारायण नारायण नर हरि हरि हरि हरि नारायण

(२३) बोल हरि बोल हरि बोल गौर हरि बोलना
गौर हरि बोलना गौरंग हरि बोलना
हरि हरि बोल कृष्ण हरि बोलना
हरि हरि बोलना कृष्ण हरि बोलना

श्रीकृष्ण ध्वनियां

(१) श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे
हे नाथ नारायण वासुदेव

(२) श्यामसुन्दर मदनमोहन जय जय पाण्डुरङ्ग
पाण्डुरङ्ग पाण्डुरङ्ग पाण्डुरङ्ग पाण्डुरङ्ग
पाण्डुरङ्ग जय पाण्डुरङ्ग जय पाण्डुरङ्ग जय पाण्डुरङ्ग
पाण्डुरङ्ग हरि पाण्डुरङ्ग हरि पाण्डुरङ्ग हरि पाण्डुरङ्ग
जय जय विट्ठल पाण्डुरङ्ग जय हरि विट्ठल पाण्डुरङ्ग
विट्ठल विट्ठल पाण्डुरङ्ग विट्ठोबा विट्ठोबा पाण्डुरङ्ग

(३) राधे बोलो राधे बोलो राधे गोविन्द बोलो
राधे गोविन्द बोलो सीता गोविन्द बोलो
श्यामसुन्दर मदनमोहन राधे गोविन्द बोलो
राधेगोविन्द कृष्ण राधे गोपाल कृष्ण
वेणु विनोद कृष्ण वेदान्त वेद्य कृष्ण
भक्त वत्सल कृष्ण पतित पावन कृष्ण

(४) राधा कृष्ण कुञ्ज बिहारी मुरलीधर गोवर्धन धारी
शंखचक्र पीताम्बर धारी करुणा सागर कृष्ण मुरारी
राधे कृष्ण भजो कुञ्ज बिहारी
जय मन मोहन श्याम मुरारी

(५) भजो कृष्ण मुरारी गोविन्द, भजो नटवर गिरधारी गोविन्द
भजो कुञ्ज विहारी गोविन्द, भजो बांके विहारी गोविन्द

(६) केशव गोविन्द कृष्ण सच्चिदानन्द कृष्ण

(७) मोहन बंसी वाले तुम को लाखों प्रणाम
गोकुल मथुरा वाले तुमको लाखों प्रणाम
गीता ज्ञान सुनाने वाले तुम को लाखो प्रणाम
गोवर्धन गिरधारी तुम को लाखो प्रणाम

(८) जय कृष्ण हरे जय राम हरे
जय मुरलीधर घनश्याम हरे
जय राम हरे घनश्याम हरे
जय जय यदुनायक श्याम हरे

(९) गोविन्द हरे गोपाल हरे
जय जय प्रभु दीन दयाल हरे
राम हरे जय राम हरे
सीताराम हरे रघुराम हरे
कृष्ण हरे जय कृष्ण हरे
राधेश्याम हरे राधे कृष्ण हरे
जय कृष्ण हरे गोविन्द हरे
जय जय गोपाल मुकुन्द हरे

(२२) भक्तपाल शक्तिलोल युक्ति जाल विट्ठल
विट्ठल विट्ठल, विट्ठल विट्ठल, विट्ठल विट्ठल, विट्ठल
भक्तपाल पाल पाल, शक्ति लोल लोल, युक्ति जाल जाल, वि

(२३) बंसुरी बंसुरी बंसुरी श्याम की
श्रीराम राधेश्याम सीताराम श्रीगोपाल
हरेराम हरेराम हरेराम सियाराम
सीताराम राधेश्याम सीताराम राधेश्याम

(२४) कंसारी हे त्रिपुरारी, गिरिधारी घनश्याम हरे
भवभयहारी कुञ्जविहारी बनवारी सुखधाम हरे
दयासिन्धु जगतारन मोहन मुरलीधारी नन्दलाल हरे
राधा वल्लभ यशोदानन्दन जयवर्धन गोपाल हरे

(२५) श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम—
श्याम श्याम राधेश्याम
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण—
कृष्ण कृष्ण राधेकृष्ण
हरेराम हरेराम रामराम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

(२६) जयगोपाल जयगोपाल जय मनमोहन जय नन्दलाल
जय जय विट्ठल जय हरि विट्ठल विट्ठल विट्ठल जय पांडुरङ्ग

(२७) जय मुरलीधर जय असुरारी जय मनमोहन कुञ्जविहारी
जय मुरलीधर जय कंसारी जय मन मोहन कृष्णमुरारी

(२८) हरे कृष्ण हरे राम राधे गोविन्द

(२९) जय जय राधेकृष्ण
राधेकृष्ण राधेगोविन्द
राधेगोविन्द भजो राधेगोविन्द
राधेगोविन्द भजो सीता गोविन्द
श्याम सुन्दर मदन मोहन
वृन्दावन वृजचन्द्र
जय जय राधेकृष्ण......

(३०) राधेगोविन्द कृष्ण राधेगोपाल कृष्ण
नन्दनन्दन कृष्ण नवनीत चोर कृष्ण
वेणु विनोद कृष्ण वेदान्त वेद्य कृष्ण
गोविन्द राम कृष्ण गोपाल राम कृष्ण
गोपाल मुकुन्द कृष्ण हरि हरि राम कृष्ण

(३१) राम हो कृष्ण हो राधे कृष्ण देव हो
वेणु गान लोल नील मेघश्याम कृष्ण हो

(३२) भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं हरे हरे
भजो श्रीकृष्ण भजो श्रीकृष्ण भजो श्रीकृष्ण हरे हरे

(३३) जय राधेश्याम, जय जय राधेश्याम जय

जय राधेश्याम, जय जय राधेश्याम

जय राधेश्याम जय, जय राधेश्याम जय,

जय राधेश्याम जय, राधेश्याम

जय राधेश्याम जय जय राधेश्याम जय

जय राधेश्याम जय श्याम श्याम श्याम

राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम जय राधेश्याम

(३४) जय गोविन्द जय गोपाल केशवमाधव दीनदयाल

जय दामोदर कृष्ण मुरार जानकीवल्लभ सर्वाधार

(३५) राधे राधे गोविन्द बोलो भाई, राधे राधे गोविन्द बो

गोविन्द बोलो राधे रा

(३६) ॐ श्याम श्याम श्याम श्याम राधेश्याम

ॐ श्याम श्याम श्याम श्याम राधेश्याम

(३७) गोविन्द गोविन्द गोपाल राम

गोपाल गोपाल गोविन्द राम

गोविन्द राम गोपाल राम

(३८) गोविन्द राम राम गोपाल हरि हरि

गोपाल राम राम गोविन्द हरि हरि

(३६) मदनमोहन भजो वृन्दावनचन्द्र भजो
राधे गोविन्द भजो राधे गोविन्द भजो

(४०) भजो राधे गोविन्द

राधे गोविन्द राधे गोविन्द

हरे कृष्ण हरे राम राधे गोविन्द

हरि बोलो बोलो भाई राधे गोविन्द

राधे गोविन्द भजो सीता गोविन्द

सीता मुकुन्द भजो राधे गोविन्द

भजो राधे गोवि

शिव ॐ सीताराम हरि ॐ राधेश्याम

(४१) श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्द
हरे कृष्ण हरे राम श्रीराधे गोविन्द

(४२) हरि हराय नमः कृष्ण यादवाय नमः
गोपाल गोविन्द राम श्री मधुसूदन
यादवाय माधवाय केशवाय नमः

(४३) राधे वल्लभ कुञ्ज विहारी
सांवल मोहन कृष्ण मुरारी

(४४) गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे

राधेकृष्ण गोपीकृष्ण श्री कृष्ण प्यारे
नारायण वासुदेव श्रीकृष्ण प्यारे

(४५) श्रीकृष्ण गोविन्द माधव मुरारी
रमानाथ राधारमण दुःख हारी

(४६) जय मुरलीधर जय नन्दलाल
जय मधुसूदन जय गोपाल

(४७) जय मुरलीधर जय गिरधारी
जय मनमोहन कृष्णमुरारी
जय शारङ्गधर जय असुरारी
जय राधावल्लभ कुञ्जविहारी
मुरलीधर माधव कृष्ण मुरारी

(४८) जय कृष्ण हरे जय राम हरे
जय मुरलीधर घनश्याम हरे
जय कृष्ण हरे गोविन्द हरे
जय जय गोपाल मुकुन्द हरे

(४९) राधेकृष्ण भजो कुञ्ज विहारी
मुरलीधर गोवर्धनधारी
मुरलीधर गोवर्धनधारी
मुरलीधर पीताम्बरधारी

राधेकृष्ण जय कुञ्जविलास
गोपी मानस राजहंस
गोपीमानस राजहंस—गोपी मानस राजहंस

(५०) राधेश्याम राधेश्याम श्याम श्याम राधे राधे
राधेकृष्ण राधेकृष्ण कृष्ण कृष्ण राधे राधे
राधेगोविन्द राधेगोविन्द राधेगोविन्द राधे राधे
राधेकृष्ण राधेकृष्ण राधेकृष्ण राधे राधे

(५१) नमो नमो गोविन्द जय श्री राधिके
नमो नमो गोविन्द जय राधेरानी
नमो नमो गो

(५२) कृष्ण नामैव नामैव नामैव मम जीवनम्
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण

(५३) कृष्णं वन्दे नन्द कुमारम
राधावल्लभ नवनीतचोरम्
मुरलीधर सुकुमार शरीरम
गोपी वल्लभ नन्द किशोरम्

(५४) भज गोविन्दम् भज गोविन्दम् गोविन्दम् भज
सम्प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृ

पुनरपि जननं पुनरपि मरणम्
पुनरपि जननी जठरे शयनम्
इह संसारे बहु दुस्तारे कृपया पारे पाहि मुरारे

भज गोविन्दम्......

(५५) गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे
गोविन्द गोविन्द रथांगपाणे
गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण
गोविन्द गोविन्द नमामि तुभ्यम् ॥

(५६) श्री कृष्ण राधावर गोकुलेश
गोपाल गोवर्धन नाथ विष्णो
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(५७) श्रीकृष्ण विष्णो मधुकैटभारे
भक्तानुकम्पिन् भगवन् मुरारे
त्रायस्व मां केशव लोकनाथ
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(५८) कृष्ण कृष्ण नमोऽस्तुते
केशवाय नमोऽस्तुते
लोक वन्धु नमोऽस्तुते
जय विष्णु नाम नमोऽस्तुते
जय माधवाय नमोऽस्तुते
जय चक्रपाणिं नमोऽस्तुते

राज राज नमोऽस्तुते	जय दीनपाल नमोऽस्तुते
वासुदेव नमोऽस्तुते	जय वारिजाक्ष नमोऽस्तुते
वेणु लोल नमोऽस्तुते	जय गोपीबाल नमोऽस्तुते
वामनाय नमोऽस्तुते	जय पूतनारि नमोऽस्तुते
सर्व शक्त नमोऽस्तुते	जय शाश्वताय नमोऽस्तुते
मुक्तिदाय नमोऽस्तुते	जय शक्ति पाल नमोऽस्तुते
नारसिंह नमोऽस्तुते	जय पाण्डुरङ्ग नमोऽस्तुते

यशः कीर्तन

गोपाल कृष्ण राधे कृष्ण
कृष्ण मुरारी गिरवरधारी

कृष्ण मुरारी मेरे गिरवरधारी
बांके बिहारी मेरे मोहन प्यारे
कृष्ण कन्हैया रासरचैया
आजा बंसी बजाने वाले
आजा गीता ज्ञान सुनाने वाले
आजा भारत के रखवाले
आजा गौएं चराने वाले

आजा आजा आजा आजा

आजा बेड़ा पार लगाने वाले

आजा दुःख मिटाने वाले

आजा कष्ट मिटाने वाले

आजा शिव का धनुष उठाने वाले

आजा द्रौपदी चीर बढ़ाने वाले

आजा माखन चुराने वाले

आवो मुरारी गिरवरधारी

कृष्ण कन्हैया कहाने वाले

माखन चोर कहाने वाले

हे कृष्ण आजा बन्सी बजाजा

हे कृष्ण आजा गीता सुनाजा

हे कृष्ण आजा माखन खाजा

हे कृष्ण आजा लीला दिखाजा

श्रीराधे राधे राधे श्रीराधे राधे राधे

श्रीराधे राधे राधे श्रीराधे श्याम मिलादे

मिश्रित ध्वनियां

(१) हर हर हर हर वं वं वं

हरि हरि हरि हरि ॐ ॐ ॐ

हर वं हर वं हर वं वं वं

हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ ॐ ॐ

हर हर हर वं वं वं

हरि हरि हरि ॐ ॐ ॐ

हर वं हरि ॐ हर वं हरि ॐ

हरि ॐ हर वं हरि ॐ हर वं

वं वं वं वं वं वं वं

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

वं ॐ वं ॐ वं ॐ वं

आजा बेड़ा पार लगाने वाले
आजा दुःख मिटाने वाले
आजा कष्ठ मिटाने वाले
आजा शिव का धनुष उठाने वाले
आजा द्रौपदी चीर बढ़ाने वाले
आजा माखन चुराने वाले
आवो मुरारी गिरवरधारी
कृष्ण कन्हैया कहाने वाले
माखन चोर कहाने वाले

हे कृष्ण आजा बन्सी बजाजा
हे कृष्ण आजा गीता सुनाजा
हे कृष्ण आजा माखन खाजा
हे कृष्ण आजा लीला दिखाजा
श्रीराधे राधे राधे श्रीराधे राधे राधे
श्रीराधे राधे राधे श्रीराधे श्याम मि

मिश्रित ध्वनियां

(१) हर हर हर हर वं वं वं

हरि हरि हरि हरि ॐ ॐ ॐ

हर वं हर वं हर वं वं वं

हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ ॐ ॐ

हर हर हर वं वं वं

हरि हरि हरि ॐ ॐ ॐ

हर वं हरि ॐ हर वं हरि ॐ

हरि ॐ हर वं हरि ॐ हर वं

वं वं वं वं वं वं वं

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

वं ॐ वं ॐ वं ॐ वं

ॐ वं ॐ वं ॐ वं ॐ

(२) जय जय सीता राम रमापति जय जय राधे श्याम श्याम
जय जय शंकर कैलासपति जय उमापति महादेव

(३) जय रामा जय जय राम जय सीता राम
जय राम......

जय कृष्ण जय जय कृष्ण जय राधे कृष्ण

(४)

राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम

राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे

हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ हरि हरि
हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ हरि हरि

हरि बोल हरि बोल हरि बोल हरि हरि
हरि बोल हरि बोल हरि बोल हरि हरि

शङ्कर शङ्कर शङ्कर हर हर
शङ्कर शङ्कर शङ्कर हर हर

शिव शिव शिव हर हर
शिव शिव शिव हर हर

भजो वाहे गुरु भजो नानक
भजो नारायण भजो सदाशिव
भजो शम्भो शङ्कर भजो महादेव
भजो राजेश्वरी भजो भुवनेश्वरी

(६)

राम राम रमे राम
हरे कृष्ण हरे राम
हरे राम हरे राम
राधा कृष्ण राधेश्याम

(७)

शङ्कर शिव शङ्कर शिव शङ्कर शिव शङ्कर
शङ्कर शिव शङ्कर शिव शङ्कर शिव शङ्कर
माधव हरि माधव हरि माधव हरि माधव
माधव हरि माधव हरि माधव हरि माधव

राघवरघु राघवरघु राघवरघु राघव
राघवरघु राघवरघु राववरघु राघव

अच्युतानन्द गोविन्द हरि सच्चिदानन्द शाश्वत
अच्युतानन्द गोचिन्द हरि सच्चिदानन्द शाश्वत

(८)

बिहारी मुरारी गिरवरधारी
श्रीकृष्ण गोपीकृष्ण राधे कृष्ण
नन्दलाला कमली वाला वंसी वाला
गोकुल का रहने वाला मुरली वाला
श्रीराम जय राम सीताराम राम राम
कौसिल्या कोदण्ड सियावर राम

श्याम हरि श्याम हरि श्याम हरि श्याम
राम हरि राम हरि राम हरि राम

श्रीराम श्रीराम श्रीसीताराम,
श्रीश्याम श्रीश्याम श्रीराधेश्याम

राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम राम
श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम

शम्भो शङ्कर शम्भो शङ्कर शङ्कर महादेव
शम्भो शङ्कर शम्भो शङ्कर शङ्कर सदाशिव

जय शङ्कर जय शङ्कर जय शङ्कर
गौरी शङ्कर गौरी शङ्कर गौरी शङ्कर

चिदानन्द सत्यम् अनन्तम ब्रह्म
चिदाकाश शान्तम् शिवमद्वैतम्

राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम

राम राम राम राम
राम राम राम राम

जय जय जय राधेश्याम
जय जय जय राधेश्याम
जय जय जय राधेश्याम

जय जय राधे
जय जय राधे

जय जय जय सीताराम
जय जय जय सीताराम
जय जय जय सीताराम

जय जय सीते जय जय सीते

---

(१०) अच्युतं केशवं राम नारायणं
कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरिम् ।
श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं
जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे ॥

---

(११) जयति शिवाशिव जानकी राम
जय रघुनन्दन राधेश्याम

अवध विहारी सीताराम

कुञ्ज विहारी राधेश्याम

अवध सरयू सीताराम
कमल विमल मिथिला धाम

कमल विमल मिथिला धाम
गङ्गा तुलसी सालगराम

दशरथ नन्दन सीताराम
अधम उद्धारक राधेश्याम

धनुषधारी सीताराम
मुरलीधारी राधेश्याम

जय रघुनन्दन सीताराम
जय यदु नन्दन राधेश्याम

जय भव भंजन सीताराम
द्वन्द निकन्दन राधेश्याम

जय खरारी राघव राम
जयति मुरारी माधव श्याम

जय दुख नाशक सीताराम

प्रेम प्रकाशक राधेश्याम

भव निधि तारन सीताराम

अधम उधारन राधेश्याम

जय जय रघुवर राजाराम

जय जय नटवर मोहन श्याम

राम राम राम जय सीताराम रामा रामा रामा

श्याम श्याम श्याम जय राधेश्याम कृष्ण कृष्ण कृष्ण

राम राम राम राम रामा रामा रामा रामा

जय राधेश्याम

दक्षिणी राग

श्रीराम चन्द्रिने श्रीलोल सुन्दरने

श्रीमन्नारायणने राम राम राम

दशरथर्कुम् पुत्तिरे

मुनिर्कुम् मित्तिरारे

अडियारैक्कारुमय्या राम राम राम
कारण परिपूर्ण
कल्लई पेन्नाक्कियवर
विल्लई तूलाक्कियवर
कर्मेनियाने आल राम राम राम
रामा रामा रामा रामा राम
रामा रामा रामा
रामा रामा रामा
रामा रामा रामा राम राम राम
वैकुण्ठ वासकने गोपाल मुकुन्दने
श्रीमन्नारायणने राम राम राम
शिव शम्भो सदाशिव शम्भो सदाशिव
शम्भो सदाशिव वं वं वं
कैलासवासकने पार्वतीनायकने
चन्द्रकलाधरने वं वं वं
द्वारका वासकने गोकुलपालकने
राधा मनोहर ने श्याम श्याम श्याम
गोवर्धनोद्धारने गोपी मनोहरने
बाल गोपालकने श्याम श्याम श्याम

सीताराम सीताराम सीताराम राम
राम सिया राम सिया राम सिया राम
सीताराम सीताराम सीताराम राम
राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम श्याम
श्याम हरि श्याम हरि श्याम हरि श्याम
राम हरि राम हरि राम हरि राम

राम राम राम राम राम राम राम राम राम सीताराम
जानकी वल्लभ प्राणवल्लभ कौसल्या प्यारे राम
नारायण वासुदेव गोविन्द हरि राम
श्रीराम सीताराम जय जय राम
श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम राधेश्याम
गोपी वल्लभ राधेवल्लभ मोहन घनश्याम
श्रीकृष्ण गोपीकृष्ण राधेकृष्ण

गोविन्द जय जय गोपाल जय जय
राधा रमण हरि गोविन्द जय जय
शङ्कर जय जय गोपाल जय जय
उमा रमण शिव शङ्कर जय जय

राम की जय जय सीता की जय जय
दशरथ के लाल चारों भाइयों की जय जय
गङ्गा की जय जय देवी की जय जय
गौरी रमण शिव शक्ति की जय जय

जय राम श्रीराधे कृष्ण भजले सीताराम
भजले सीताराम प्यारे भजले राधेश्याम

राजाराम राम राम सीताराम राम राम
राजाराम राम राम सीताराम राम राम
श्याम श्याम राधेश्याम राधाकृष्ण राधेश्याम
श्याम श्याम राधेश्याम राधाकृष्ण राधेश्याम

अन्तरा

हे राम जय राम सीताराम राम राम
हे राम जय राम सीताराम राम राम
हे श्याम जय श्याम घनश्याम राधेश्याम
हे श्याम जय श्याम घनश्याम राधेश्याम
हे श्याम श्याम जय श्याम श्याम घनश्याम श्याम राधेश्याम

जय राम हरे सुख धाम हरे
जय जय रघुनायक श्याम हरे
गोविन्द हरे गोपाल हरे
जय जय प्रभु दीनदयाल हरे

राम राघव राम राघव राम राघव पाहिमाम्
कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव रक्षमाम्

सीताराम सीताराम सीताराम राम
राधेकृष्ण राधेकृष्ण कृष्ण राधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे
जय श्रीराधे जय श्रीराधे जय श्रीराधे
सीते सीते सीते सीते सीते सीते
जय श्रीसीते जय श्रीसीते जय श्रीसीते
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्
रि ॐ शान्ति हरि ॐ शान्ति हरि ॐ शान्ति

ॐ तत्सत् ॐ तत्सत् ॐ तत्सत् ॐ
ॐ तत्सत् ॐ तत्सत् ॐ तत्सत् ॐ
ॐ तत्सत् ॐ तत्सत् ॐ तत्सत् ॐ
हरि ॐ तत्सत् श्री ॐ तत्सत् शिव ॐ तत्सत् ॐ
ॐ तत्सत् ॐ तत्सत् ॐ तत्सत् ॐ
ॐ शान्ति ॐ शान्ति ॐ शान्ति ॐ
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ विचार
ॐ ॐ ॐ ॐ भजो ॐकार

जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्री राधे
जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण जय कृष्ण जय श्री कृष्ण
जय सीते जय सीते सीते जय सीते जय श्री सीते
जय राम जय राम राम जय राम जय श्री राम
जय गौरी जय गौरी गौरी जय शक्ति जय पार्वती
जय शम्भो जय शम्भो शम्भो जय शम्भो कैलासपति

राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम राम

सीताराम सीताराम   सीताराम सीताराम
सीताराम सीताराम   सीताराम सीताराम
सियाराम सियाराम   सियाराम सियाराम
सियाराम सियाराम   सियाराम सियाराम
राम राम सीताराम   राम राम सीताराम
राम राम सीताराम   राम राम सीताराम
सियाराम सीताराम   सियाराम सीताराम
सियाराम सीताराम   सियाराम सीताराम
राधेश्याम राधेश्याम   राधेश्याम राधेश्याम
राधेश्याम राधेश्याम   राधेश्याम राधेश्याम

नारायण नारायण नारायण नारायण
नारायण नारायण नारायण नारायण

ॐ ॐ ॐ ॐ   ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ   ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ शिव हर हर   गङ्गे हर हर

शम्भो हर हर   वं वं हर हर

हंसः सोऽहम्   सोऽहम् हंसः
हंसः सोऽहम   सोऽहम् हंसः
ब्रह्मैवाऽहम्   ब्रह्मैवाऽहम्
ब्रह्मैवाऽहम   ब्रह्मैवाऽहम्

शिवैवाऽहम् शिवैवाऽहम्
शिवैवाऽहम् शिवोऽहम्
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्
राम राम राम राम…

राधेश्याम श्याम श्याम श्याम
जय जय श्याम श्याम श्याम श्याम
घनश्याम श्याम श्याम श्याम
जय मुरलीधर जय कंसारी
जय मन मोहन कुञ्जबिहारी
राधे कृष्ण गोपाल कृष्ण
सीताराम राम राम राम
जय जय राम राम राम राम
जानकी राम राम राम राम
जय सारङ्गधर जय असुरारी
जय मन मोहन राम खरारी
जय जय राम सियावर राम

हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे
नीलकण्ठ सदाशिव नटराज सुन्दरेश
राधा कृष्ण भजो कुञ्ज विहारी
मुरलीधर गोवर्धन धारी
शङ्ख चक्र पीताम्बरधारी
करुणा सागर कृष्ण मुरारी

नारायण अच्युत गोविन्द माधव केशव
सदाशिव नीलकण्ठ शम्भो शङ्कर महादेव
राजेश्वरी महेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी मातेश्वरी
गङ्गा मैया तारले पापियों को तारले
ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः

भजन और कीर्तन ध्वनियां

सीताराम कहो राधेश्याम कहो
सीताराम कहो राधेश्याम कहो
सीताराम बिना सुख स्वपना नहीं
राधेश्याम बिना कोई अपना नहीं

सीताराम बिना सुख कौन करे
राधेश्याम बिना दुख कौन हरे
सीताराम बिना उद्धार नहीं
राधेश्याम बिना बेड़ा पार नहीं
सीताराम बिना आनन्द नहीं
राधेश्याम बिना कुछ जीवन नहीं
सीताराम बिना देख सकते नहीं
राधेश्याम बिना सुन सकते नहीं
सीताराम बिना सोच सकते नहीं
राधेश्याम बिना श्वांस ले सकते नहीं

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो
मन को विषयों के विष से हटाते चलो।
देखना इन्द्रियों के ना घोड़े भगें
रात दिन इनको संयम के कोड़े लगे
अपने रथ को सुमारग चलाते चलो
कृष्ण गोविन्द गोपाल

प्राण जावे मगर नाम भूलो नहीं

नाम जपते रहो काम करते रहो
नाम धन का खज़ाना बढ़ाते चलो

कृष्ण गोविन्द..........

पाप की वासनाओं से डरते रहो
प्रेम भक्ति के आंसू बहाते चलो
ख्याल आयेगा उसको कभी ना कभी
भक्ति पायेगा उसको कभी ना कभी
ऐसा विश्वास मन में जमाते चलो

कृष्ण गोविन्द......

सुख में ना हंसना दुःख में ना रोना
हरदम गोविन्द गोविन्द गाते चलो।
हे राम हरे राम जपा करो
चार बजे ब्रह्ममुहूर्त में उठा करो
मैं कौन हूं इसको विचारा करो
रात दिन नाम ईश्वर का जपते रहो

कृष्ण गोविन्द......

———

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
वासुदेवाय कृष्ण देवाय
नाथ नारायणं केशवं माधवम्
केशवं माधवं केशवं माधवम्
कहो नाथ शबरी के घर कैसे आए
जो आये तो क्यों झूठे फल तुमने खाये
लिया था यही नाम वन वन में फिर कर
श्रीराम श्रीराम श्रीराम श्रीराम
रटो मेरी रसना सुन्दर श्याम
सुन्दर श्याम बोलो राधेश्याम
सुन्दर श्याम बोलो सीताराम
सुन्दर श्याम बोलो राधेश्याम

———

लीला कीर्तन

मेरे श्याम पिया नहीं आए ढूंढ़ ले आवो सखियं
मेरे श्याम प्यारे कृष्ण मस्त अलमस्त बना दे

———

मन मोहन बंसी वाले तुम को लाखों प्रणाम
गोकुल मथुरा वाले तुमको लाखों प्रणाम

रास रचाने-वाले तुम को लाखों प्रणाम
गौएं चराने वाले तुम को लाखों प्रणाम
माखन चुराने वाले तुमको लाखों प्रणाम
आनन्द देने वाले तुम को लाखों प्रणाम
बंसी बजाने वाले तुम को लाखों प्रणाम
गीता ज्ञान सुनाने वाले तुम को लाखों प्रणाम
गिरिवर उठाने वाले तुम को लाखों प्रणाम
कन्हैया कहाने वाले तुम को लाखों प्रणाम

मन तू राधे कृष्ण बोल तेरा क्या लगेगा मो
तेरा हाथ पांव नहीं हिलता
दस बीस कोस नहीं चलता
तू मन की घुन्डी खोल, तेरा क्या लगेगा मो
तेरा मन बहुरङ्गी घोड़ा
घोड़े के पांच बछेड़ो
इन पांचों की बागें मोड़, तेरा क्या लगेगा मो
यह माया है बहुठगनी
ठगनी ने जग भरमाया
तू ने झूठा भरम कमाया

इस ठगनी का पल्ला छोड़, तेरा क्या लगेगा मोल

प्रभु को गावे है ब्रह्मचारी
तेरे नाम पे बलहारी
तारे ध्रुव भगत अवतारी

हरि चरणों में मस्तक रोल, तेरा क्या लगेगा मोल

पिलादे पिलादे पिलादे कृष्ण
ओ प्रेम भर प्याला पिलादे कृष्ण
दिखाजा दिखाजा दिखाजा कृष्ण
वो माधुरी की मूर्ति दिखाजा कृष्ण
लगाजा लगाजा लगाजा कृष्ण
मेरी नैया को पार लगाजा कृष्ण
खिलादे खिलादे खिलादे कृष्ण
माखन और मिश्री खिलादे कृष्ण

दरशन दीजिये बंसुरी वाला
बंसुरी वाला, बंसुरी वाला
बंसुरी वाला, बंसुरी वाला
श्याम सुन्दर प्यारे बंसुरी वाला

वंसुरी वाला, वंसुरी वाला
बंसुरी वाला, बंसुरी वाला
दर्शन दीजिये..........

सांवरा वंसुरी वाला नन्द लाला
गोकुल के रहने वाला (उजियाला)
कोई कोई कहे कृष्ण मुरारी
कोई कोई कहे नटवर गिरधारी
जपें तुम्हारी माला नन्दलाला
गोकुल के रहने वाला
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

पढ़ो पोथी में राम देखो खम्वे में राम
लिखो तख्ते पे राम हरे राम राम राम
पियो फाक़ी में राम जीमो खाने में राम
चोलो घूमने में राम हरे राम राम राम

देखो आंखों से राम   सुनो कानों से राम
बोलो जिह्वा से राम   हरे राम राम राम
बोलो जाग्रत में राम   देखो स्वप्न में राम
पाओ सुप्ति में राम   हरे राम राम राम
बाल्यावस्था में राम   युवावस्था में राम
वृद्धावस्था में राम   हरे राम राम राम

अब आगया वंसुरी वाला   अब आगया बंसुरी वाला
मोर मुकट मुख मुरली जाके
गले वैजन्ती माला
अब आ गया..........
गौआं चरावे बंसी बजावे
नाचे देदे तालां
अब आ गया..........

दीनों के बन्धु दीनों के नाथ जय गोविन्द जय गोपाल

शरण में आये हैं हम तुम्हारी दया करो हे दयालु भगवन्

ना हम में साधन ना हम में शक्ति
ना हम में पूजन ना हम में भक्ति
तुम्हारे दरके हैं हम भिखारी
दया करो हे दयालु भगवन्

इस असार संसार सिन्धु में राम नाम आधार है
जिसने मुख से राम कहा उस जन का बेड़ा पार है

राम नाम का यश महेश ने गाया
राम नाम का फल गणेश ने पाया
राम नामने वाल्मीकि को तारा
राम नाम नारद मुनि को है प्यारा

हरि नाम जपो हरि नाम जपो हरि नाम जपो हरि नाम जपो
सिया राम जपो सिया राम जपो सिया राम जपो सिया राम जपो

राम भजो राम भजो राम भजो जी
राम कृष्ण गोविन्द गोपाल भजो जी
राम ध्वनि लागी गोपाल ध्वनि लागी
कैसे छूटे अब राम ध्वनि लागी ।

महामन्त्र है ये जपाकर जपाकर
हरि ॐ तत्सत् जपा कर जपा कर

जय श्रीकृष्ण जय श्रीराम
अधम उधारन पूरण काम
ईश्वर अल्लाह तेरा नाम
सब को सम्मति दे श्री राम

जिस हाल में जिस देश में जिस वेश में रहो
राधा रमण राधा रमण राधा रमण कहो
दुर्गामाता दुर्गामाता दुर्गामाता कहो
जिस काम में जिस धाम में जिस ग्राम में रहो
राधा रमण राधा रमण राधा रमण कहो

गङ्गा माता गङ्गा माता गङ्गा माता कहो

जिस रोग में जिस भोग में जिस योग में रहो

राधा रमण राधा रमण राधा रमण कहो

भुवनेश्वरी महेश्वरी मातेश्वरी कहो

श्री जगदम्बा जगदम्बा जगदम्बा कहो

पतित पावन कलिमल हारी दीनन के हो तुम हितक

जय जय सीताराम की जय बोलो हनुमान क

राम लछमण जानकी जय बोलो हनुमान की

जय हनुमान जय जय हनुमान जय

जय हनुमान जय जय हनुमान

राम सीता राम सीता राम सीता राम राम

एक बार प्रेम से बोलो राम सीता राम राम

एक बार प्रेम से बोलो श्याम श्याम राधेश्याम

राम सीता राम राम राम सीता राम राम
श्याम श्याम राधेश्याम श्याम श्याम राधेश्याम

गोविन्दा ना गायो रे तू क्या कमाया बावरे

भजो रें भैया राम गोविन्द हरि
राम गोविन्द हरि राम गोविन्द हरि

कन्हैया के हम हैं हमारे हैं कन्हैया
यशोदा की आंखों का तारा कन्हैया

भजो नित्य ही राधेश्याम
जपो हरे कृष्ण हरे राम
कृष्ण कहो कृष्ण जपो लेवो कृष्ण नाम
कृष्ण माता कृष्ण पिता कृष्ण दादा है

बंसुरी, बंसुरी, बंसुरी बजावे श्याम माधुरी लतान में

हरी हरी पुकारती हरी हरी लतान में
हरी हरी कदम्बकी हरी हरी छड़ी लिये
वंसुरी बजावे श्याम माधुरी लतान में

हरि बोलो हरि हरि हरि बोलो हरि हरि
राधेश्याम राधे राधे राधेश्याम राधे राधे
राधे रमण हरि हरि राधा रमण हरि हरि
शम्भो शङ्कर हरि हरि शम्भो शङ्कर हरि हरि
सीताराम सीते सीते सीताराम सीते सीते

जग में सुन्दर हैं दो नाम सीताराम राधेश्याम
जय मीरा के गिरधर नागर जय सूरदास के सुन्दर श्याम
जय नरसी के सावरियां हो जय तुलसीदास के सीताराम
जय ब्रजनन्दन गोपीचन्दन लीलाधारी श्याम
भव भय भंजन जन मन रंजन संकट हारी राम

वंसुरी वंसुरी वंसुरी श्याम की
तेरी वंसी ने मेरा मन मोहलिया
मेरा मन हर लीना वंसुरी श्याम की

मुझे सुधना रही तन मन की ज़रा
बोल हरि बोल हरि बोल हरि बोल
सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम
अरे मन अरे मन रटो रटो राम नाम

गोविन्द का भजन कर ले हे मन मूढ़ मते
गोविन्द का भजन करले

अन्तर्यामी नर नारायण, गोविन्द का भजन करले
श्याम सुन्दर अब तो हम प्रेमी तुम्हारे बन गये
हम तुम्हारे बन गये और तुम हमारे बन गये
जब यह दिल दुनिया का था दुश्मन हजारों के बने
जब यह दिल तुम को दिया हर दिल के प्यारे बन गये

अञ्जनासुत हनुमन्त हरे बली
वायुसुत हनुमन्त हो।
हुकम लेकर लङ्का पैरकर
बन में जाके देखे हो

अशोक वन में सीता बैठी
हम भी जाकर देखें हो।

राम लक्ष्मण दो जन भाई
हम श्री राम जी के दूत हो
खूब प्रेम से चूड़ामणि देखके
रामजी का दिल बहुत खुश हो।

नारायण नारायण भजमन नारायण नारायण
नारायण का नाम जो लेता
भव सागर से पार उतरता

नारायण जो बोला
भव सागर से पार

भजमन नारायण नारायण

बांके बिहारी मेरे मोहन प्यारे
कृष्ण कन्हैया रास रचैया

कृष्ण मुरारी मेरे गिरवरधारी

बन्धन काट मुरारी मेरे बन्धन काट मुरारी।

अब आजा रे अब आजा रे

मुरली वाले झलक दिखलाजा रे

सत्कार तेरा कैसा करूं मैं देवकीनन्दन

ना दूध दही रहा ना मिसरी और मक्खन

पृथ्वी से निकलते नहीं अब कन्द मूल भी

गैरों के हवाले हुए फल और फूल भी

सुक्खी भाजी का भोग लगा जा

अब आजा रे अब आजा रे·····

लताओं में वृज की गुजारा करेंगे

कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे

कभी तो मिलेंगे वो बांके बिहारी

उनके चरण चित लगाया करेंगे।

जो रूठेंगे हम से वो श्याम मुरारी

तो रो रो के उनको मनाया करेंगे।

बनायेंगे हृदय में हम प्रेम मन्दिर

उनको तो भूला भुलाया करेंगे।
उन्हें प्रेम डोरी से जब बांध लेंगे

लड़गई लड़गई लड़गई हो
अखियां लड़गई श्याम सुन्दर से
..........लड़गई हो

दो दल कीर्तन ध्वनियां

१. राम कृष्ण गोविन्द (एक दल)
जय जय गोविन्द (दूसरा दल)

---

२. राधे गोविन्द जय हरि गोविन्द
राधे कृष्णा गोपाल कृष्णा

---

३. एक दल— हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
दूसरा दल— हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

राधे राधे गोविन्द गोविन्द
राधे राधे राधे गोविन्द गोविन्द गोविन्द

राधे राधे बोलना श्याम श्याम बोलना
हरि हरि बोलना गौर हरि बोलना
बं बं बोलना शङ्कर शङ्कर बोलना
शम्भो शङ्कर बोलना गौरी शङ्कर बोलना
नमः शिवाय बोलना नारायण बोलना
ॐ तत्सत् बोलना ॐ शान्ति बोलना
हरि ॐ तत्सत् बोलना ॐ तत्सत् बोलना
ब्रह्मैवाहम् बोलना तत्व मसि बोलना
सोऽहम् हंसः बोलना हंसः सोऽहम् बोलना

हरे कृष्णा हरे राम राधे कृष्ण राधेश्याम
निताई गौर राधेश्याम हरे कृष्ण हरे राम
प्रेम मधुर जुगल नाम सीताराम राधेश्याम
आवो मुरारी राधे कृष्णा गोविन्द
हरि हरि बोलना गौर हरि बोलना

गौर हरि बोलना गौरङ्ग हरि बोलना

गुरु गुरु जपना और सब स्वपना

सीता सीता राम बोलो राधे राधेश्याम बोलो

एक दल— सीता सीता राम बोलो

दूसरा दल—राधे राधेश्याम बोलो

नायक— कृष्ण चन्द्र के नाम बोलो

एक दल— गौरी गौरी शङ्कर बोलो

दूसरा दल—उमा उमा शङ्कर बोलो

नायक— महादेव के नाम बोलो

एक दल— बं बं बं बं महादेव

दूसरा दल– हर हर हर हर सदाशिव

एक दल — मदन मोहन भजो वृन्दावन चन्द्र भजो
दूसरा दल—राधे गोविन्द भजो राधे गोविन्द भजो

आञ्जनेय वीर
हनुमन्त शूर

हरे कृष्ण हरे राम गोपी वल्लभ राधेश्याम

भजो राधे कृष्णा गोविन्द
भजो रे भैया गोविन्द
आवो प्यारे गोविन्द
मिलकर गावो गोविन्द
प्रभो प्रसीद गोविन्द
अनाथ रक्षक गोविन्द
आपद् बांधव गोविन्द
दीनबन्धु गोविन्द

विपिन विहारी	राधेश्याम
कुञ्जविहारी	राधेश्याम
बांके विहारी	राधेश्याम
गिरवरधारी	राधेश्याम
मुरलीधारी	राधेश्याम
कृष्णमुरारी	राधेश्याम
बंसी वाले	राधेश्याम
मुरली वाले	राधेश्याम
कमली वाले	राधेश्याम
गोकुल वाले	राधेश्याम
राधा वल्लभ	राधेश्याम
गोपी वल्लभ	राधेश्याम

गोपी वल्लभ	राधेश्याम
(एक दल)	(दूसरा दल)

सार्वभौम कीर्तन

तर्ज—भजो राधे कृष्ण भजो राधे श्याम

भजो प्रभु ईसा भजो प्रभो मोहम्मद
भजो खुदा खुदा भजो अल्लाह अल्लाह
भजो प्रभु बुद्ध भजो तथागत
भजो अर्हत् भजो बोधिसत्व
भजो श्री कन्फ्यूशियस भजो श्री शिन्टो
भजो श्री महावीर भजो तीर्थङ्कर
भजो वाहे गुरु भजो नानकदेव
भजो गुरु अर्जुन भजो गुरु गोविन्द
भजो सन्त जोसफ भजो सन्त फ्रांसिस
भजो सन्त मैथ्यू भजो सन्त पाट्रीक
भजो मन्सूर भजो शम्स तबरेज

सर्वदेव ऋषि भक्त कीर्तन माला

[प्राचीन ऋषि]

भजो नर ऋषि भजो नारायण ऋषि
भजो पद्मभव भजो वसिष्ठ मुनि

भजो शक्ति पराशर	भजो व्यास भगवान
भजो शुक ब्रह्मर्षि	भजो गोविन्द पाद
भजो शङ्कराचार्य	भजो पद्मपाद
भजो हस्तामलक	भजो तोटकाचार्य
भजो सुरेश्वराचार्य	भजो सद्गुरु देव
भजो अत्रि भृगु	भजो वत्स वशिष्ठ
भजो गौतम कश्यप	भजो दुर्वासा अंगिरा
भजो सनक सनन्दन	भजो सनत्कुमार
भजो सनत्सुजात	भजो अष्टावक्र
भजो याज्ञवल्क्य	भजो उद्दालक
भजो अगस्त्य	भजो विश्वामित्र
भजो कपिल मुनि	भजो पतञ्जलि ऋषि
भजो वाल्मीकि ऋषि	भजो भगवान मनु
भजो ऋषि कणाद	भजो ऋषि जैमिनी
भजो प्रजापति	भजो भरद्वाज
भजो भगवान यम	भजो नचिकेता

प्राचीन सन्त

भजो शङ्कराचार्य भजो रामानुजाचार्य
भजो माध्वाचार्य भजो वल्लभाचार्य
भजो निम्बार्काचार्य भजो गोरखनाथ
भजो सदाशिव ब्रह्मन् भजो विद्यारण्य
भजो मधुसूदन स्वामी भजो श्रीधर स्वामी
भजो गौरङ्ग महाप्रभु भजो राम प्रसाद
भजो रामानन्द भजो समर्थ रामदास
भजो तायुमानवर भजो पट्टिनत्तार
भजो अप्पर सुन्दर भजो मानिक्कवाचकर
भजो तिरुवल्लुवर भजो सुन्दरमूर्ति
भजो ज्ञान सम्बन्धर भजो कण्णप्प नायनार
भजो त्यागराज भजो पुरन्दरदास
भजो वेमन्न भजो पोत्तन्ना
भजो रामलिंग स्वामी भजो तन्ना भगत
भजो टोटपुरी भजो रामकृष्ण
भजो विवेकानन्द भजो रामतीर्थ

भजो साईंबाबा
भजो गोरा कुम्हार
भजो चोकमेला
भजो कनकदास
भजो ज्ञानदेव
भजो मुक्ताबाई
भजो नामदेव
भजो रघुनाथराय
भजो त्रिलिङ्ग स्वामी
भजो काली कमली वाला
भजो तुलसीदास
भजो दामाजी
भजो नरसी मेहता
भजो नन्दनार

भजो उपासनी बाबा
भजो सेना नाई
भजो रबिदास
भजो निवृत्तिनाथ
भजो सोपानदेव
भजो एकनाथ
भजो तुकाराम
भजो मुकुन्दराय
भजो पवहारी बाबा
भजो विजयदास
भजो कबीरदास
भजो सूरदास
भजो दादू कवि
भजो पून्तानम्

भक्त

भजो प्रह्लाद
भजो पराशर
भजो व्यास
भजो शुकमुनि
भजो भीष्म पितामह

भजो नारद ऋषि
भजो पुण्डरीक
भजो अम्बरीष
भजो शौनक ऋषि
भजो रुग्माङ्गद

भजो विभीषण
भजो हनुमान
भजो लक्ष्मण
भजो भरत
भजो शत्रुघ्न
भजो जटायु
भजो गोराङ्ग
भजो ध्रुव
भजो चैतन्यदेव
भजो नित्यानन्द
भजो ध्रुव उद्धव
भजो अक्रूर सुदामा

चिरंजीवी

भजो अश्वत्थामा
भजो काक भुशुण्डि
भजो मार्कण्डेय
भजो राजा बलि
भजो व्यास भगवान
भजो नारद ऋषि
भजो हनुमान
भजो जाम्बवान

ऐतिहासिक व्यक्तियां

भजो राजा जनक
भजो हरिश्चन्द्र
भजो राजा युधिष्ठिर
भजो राजा गोपीचन्द
भजो भर्तृहरि
भजो राजा शिखिध्वज
भजो राजा भरत
भजो राजा नल
भजो अर्जुन
भजो नकुल सहदेव

भजो कर्ण शिवि
भजो दधीचि ऋषि
भजो विदुर
भजो कालिदास
भजो शिवाजी
भजो अशोक

सन्त और भक्त नारियां

भजो कौसिल्या देवी
भजो देवकी देवी
भजो यशोदा माता
भजो देवहूति
भजो सावित्री
भजो नलायिनी
भजो अहल्या
भजो अनुसूया
भजो शबरी
भजो द्रौपदी
भजो सत्यभामा
भजो मदालसा
भजो चूड़ालई रानी
भजो सुलभादेवी
भजो मैत्रेयी
भजो अरुन्धती
भजो मुक्ताबाई
भजो सक्कूबाई
भजो मीराबाई
भजो मैत्रायणी
भजो कुन्ती तारा
भजो मन्दोदरी
भजो आण्डाल
भजो अव्वायार

हिन्दू देवता [क]

भजो विष्णु भगवान
भजो पद्मनाभ

भजो प्रजापति
भजो भगवान शिव
भजो कृष्ण भगवान
भजो भगवान राम
भजो श्रीगणेश
भजो कार्तिकेय
भजो हरि भगवान
भजो मत्स्यरूप
भजो कूर्मरूप
भजो वराह रूप
भजो नरसिंहमूर्ति
भजो वामन भगवान
भजो परशुराम
भजो बलराम
भजो कल्कि अवतार
भजो दत्तात्रेय
भजो दक्षिणामूर्ति
भजो हरिहर पुत्र
भजो द्वारकाधीश
भजो पण्डरीनाथ

[ख]

भजो विराट पुरुष
भजो हिरण्यगर्भ
भजो ईश महेश
भजो अन्तरिक्ष
भजो बृहस्पति
भजो अर्य्यमा
भजो वायु भगवान
भजो त्रिशंकु
भजो इन्द्रवन्हि
भजो पितृपति
भजो निर्ऋति
भजो वरुण यम
भजो कुवेर ईश
भजो मित्रदेव
भजो विद्याधर
भजो यक्ष किन्नर
भजो गन्धर्व
भजो सिद्धचारण

भजो गुह्यक — भजो विनायक
भजो अष्टवसु — भजो नवग्रह
भजो राहुकेतु — भजो सूर्य सोम
भजो भौम बुध — भजो बृहस्पति
भजो शुक्राचार्य — भजो शनैश्चर

हिन्दु देवियां

भजो लक्ष्मीदेवी — भजो वाणी सरस्वती
भजो पार्वती — भजो उमा गौरी
भजो गायत्रीदेवी — भजो सन्ध्यादेवी
भजो दाक्षायणी — भजो दुर्गादेवी
भजो चण्डी चामुण्डी — भजो महिषासुर मर्दिनी
भजो काली माता — भजो वल्ली देवानई
भजो सीता जानकी — भजो राधा रुक्मिणी
भजो गङ्गारानी — भजो कञ्ची कामाक्षी
भजो काशी विशालाक्षी — भजो मदुरई मीनाक्षी
भजो कात्यायनी — भजो महामाया
भजो जगदम्बिका — भजो अन्नपूर्णा
(भजो भूमिदेवी)
भजो राजराजेश्वरी — भजो त्रिपुरसुन्दरी
भजो ललिताम्बिका — भजो पराशक्ति

पुण्य क्षेत्र

भजो कैलास मान सरोवर
भजो वृन्दावन धाम
भजो केदारनाथ
भजो गङ्गोत्तरी
भजो यमुनोत्तरी
भजो मुक्तिनाथ
भजो पशुपतिनाथ
भजो गङ्गासागर
भजो विष्णुप्रयाग
भजो कर्णप्रयाग
भजो रुद्र प्रयाग
भजो देव प्रयाग
भजो ऋषिकेशम्
भजो हरिद्वारम्
भजो त्रिवेणी
भजो वाराणसी
भजो मथुरा वृन्दावन
भजो गोकुल वृज
भजो द्वारकापुरी
भजो अयोध्या चित्र
भजो काशी पुष्करम्
भजो पूरी जगन्नाथ
भजो वाराणस्याम्
भजो विश्वनाथम्
भजो गौतमीतटे
भजो त्र्यम्बकम्
भजो वराल्याम्
भजो वैजनाथम्
भजो दाकिन्याम्
भजो भीम शङ्करम्
भजो दारुकावने
भजो नागेशम्
भजो उज्जयिन्याम्
भजो महाकालम्
भजो पंढरी पुरम्
भजो नैमिपारण्यम्
भजो ॐ कारे
भजो अमलेश्वरम्
भजो सौराष्ट्रे
भजो सोमनाथम्

भजो श्री शैलम्
भजो मल्लिकार्जुनम्
भजो भद्राचलम
भजो सिंहाचलम्
भजो उडुपि गोकरन
भजो गुरुवायूर
भजो तिरुपति
भजो कालहस्ति
भजो तलाई कावेरी
भजो रामेश्वरम्
भजो सेतुवन्धं
भजो पलनी श्रीरङ्गम्
भजो चिदम्बरम
भजो आकाशलिङ्गम्
भजो कालहस्ती
भजो वायुलिंङ्गम्
भजो अरुणाचलम्
भजो तेजरुलिंगम्
भजो जम्बुकेश्वरम
भजो आपःलिङ्गम्
भजो शिवाली
भजो पृथ्विलिंगम्
भजो हिमालये
भजो केदारम्
भजो शिवालये
भजो घुसृणेशम

जय जय कार कीर्तन

[कीर्तन की समाप्ति पर जय जय कार करना चाहिये]

गजवदन गणेश महाराज की जय
सीतापति रामचन्द्र की जय
पवन सुत हनुमान की जय
उमापति महादेव की जय

शरवणोद्भव षण्मुख महाराज की जय

सर्व शक्ति स्वरुपिणी महादेवी की जय

सब सन्तन की जय

सब भक्त लोग की जय

सद्गुरु महाराज की जय

गौरांग महाप्रभु की जय

दत्तात्रेय अवधूत महाराज की जय

गङ्गा महारानी की जय

सनातन धर्म की जय

जय जय सीताराम जय जय राधेश्याम

हरि ॐ

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

बीस-आध्यात्मिक-नियम

[श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती, आनन्द कुटीर-ऋषिकेश]

१. प्रातर्जागरण—नित्य ४ बजे, पहर रात रहते ब्रह्ममुहूर्त में उठो। ब्रह्ममुहूर्त ही प्रार्थना, कीर्तन, जप, ध्यान आदि के उपयुक्त है।

२. आसन—जप और ध्यान आदि के अभ्यास के लिये, पूर्वाभिमुख वा उत्तरमुख होकर, पद्मासन, सिद्धासन वा सुखासन में, आध घण्टे से तीन घण्टे तक बैठने का अभ्यास एक ही आसन पर दृढ़ता पूर्वक करो। कम से कम २० प्राणायाम नित्यनियमपूर्वक करो। अस्वस्थ वा निर्बल होने पर टहलना आदि का लघुव्यायाम नियमित रूप से करो।

३. ईश विनय—प्रातःकाल जप ध्यान वा भजन के लिये, आसन पर बैठते ही उपासना का श्री गणेश कुछ कण्ठगत स्तोत्र वा ईश विनय से करो।

४. मंत्र जप—केवल 'प्रणव' (एकाक्षर), ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (द्वादशाक्षर), ॐ नमो नारायणाय (अष्टाक्षर), ॐ नमःशिवाय (पञ्चाक्षरी), ॐ रामाय नमः, ॐ शरवणभवाय नमः; श्रीराम जय राम जय जयराम, सीताराम, हरि ॐ, ब्रह्म गायत्री अथवा अपना रुचि या भक्ति के अनुसार किसी भी इष्ट-मन्त्र का जप १०८ दानों की एक

माला से क्रमशः २१६०० तक की २०० मालाओं का अभ्यास नियम पूर्वक करो।

५. आहार शुद्धि—आहार की शुद्धि से ही सत्व की शुद्धि है। इस लिये नित्य-शुद्ध और सात्त्विक युक्ताहार करो। लालमिर्च, इमली, राई, तेल, लहसुन, प्याज और हींग आदि का सेवन नहीं करो। मिताहारी बनो। जो वस्तु तुम्हें अत्यन्त-प्रिय हो उसका सेवन वर्ष में १५ दिनों के लिये न करो। भोजन सादा स्निग्ध और सरस केवल प्राणधारण के लिये औषधिरूप में करो। "प्राण-संधारणार्थं औपधिवत् प्राश्नीयात्"। रसास्वादन के लिये भोजन करना पाप है। 'जिह्वा-संयम' के लिये वर्ष में एक महीना चीनी, और नमक का सेवन न करो। बिना चटनी के रोटी, दाल-भात पर ही जीवन निर्वाह करना सीखो। साग और दाल के लिये नमक और चाय तथा दूध के लिये चीनी दूसरी बार न मांगो।

६. पूजा घर—जप पूजा और ध्यान के लिये एक कोठरी को सदा ताले और कुञ्जी से सुरक्षित रखो।

७. स्वाध्याय—इसी पूजा घर में वेद, उपनिषद, पुराण, ब्रह्मसूत्र, श्रीमद्भगवद्गीता, योग वासिष्ठ रामायण, श्रीमद्भागवत, सहस्र नाम (विष्णु, शिव, ललित, लक्ष्मी आदि) आदित्य-हृदय आदि धर्म-ग्रंथ और स्तोत्रों का विचारपूर्ण अध्ययन नित्य-नियम पूर्वक करो।

८. ब्रह्मचर्य—वीर्य रक्षा ही ब्रह्मचर्य्य है। वीर्य की रक्षा अति सावधानी से करो। वीर्य ईश्वर की विभूति है। वीर्य जीवनी-शक्ति है।

वीर्य गति है। वीर्य परम धन है। वीर्य प्राण है। वीर्य धारण ही जीवन और विन्दु-पतन ही मरण है। 'मरणं विन्दु पातेन जीवनं विन्दु धारणात्।'

९. सत्संग—सत्संगति ही परम गति है। कुसंगति और असत्संगति से बचो। धूम्रपान, सुरापान, और मांसाहार का त्याग करो।

१०. मौन—'मौनं चैवास्मि गुह्यानाम्'—मौन का अभ्यास नित्य दो घण्टे वा सप्ताह में एक दिन नियम पूर्वक अवश्य करो।

११. उपवास—पर्व दिनों पर व्रत का पालन करो और एकादशी को निराहार, दुग्धाहार, फलाहार, सात्विक-युक्ताहार, अल्पाहार वा एकाहार से उपवास करो।

१२ दान—अपनी वित्त के अनुसार, अपनी आय का कुछ भाग, यथा सम्भव रुपये में एक आना दान प्रतिमास या प्रतिदिन नियमित रूप से करो।

१३. सत्य भाषण—सदा सच बोलो। झूठ कभी न बोलो। प्रिय बोलो। अप्रिय सत्य न बोलो। कम बोलो। अधिक न बोलो। व्यर्थ मत बोलो। मिथ्या न बोलो।

१४. अपरिग्रह—अधिक वस्तुओं का संग्रह न करो। चार की जगह तीन या दो वस्त्र ही रखो। सदा सन्तोष रक्खो। सन्तोष ही सुख का कारण है।

१५. अहिंसा—मनसा वाचा कर्मणा कभी किसी को किसी प्रकार

माला से क्रमशः २१६०० तक की २०० मालाओं का अभ्यास नियम पूर्वक करो।

५. आहार शुद्धि—आहार की शुद्धि से ही सत्व की शुद्धि है। इस लिये नित्य-शुद्ध और सात्त्विक युक्ताहार करो। लालमिर्च, इमली, राई, तेल, लहसुन, प्याज और हींग आदि का सेवन नहीं करो। मिताहारी बनो। जो वस्तु तुम्हें अत्यन्त-प्रिय हो उसका सेवन वर्ष में १५ दिनों के लिये न करो। भोजन सादा स्निग्ध और सरस केवल प्राण धारण के लिये औषधिरूप में करो। "प्राण-संधारणार्थ औषधिवत् प्राश्नीयात्"। रसास्वादन के लिये भोजन करना पाप है। 'जिह्वा-संयम' के लिये वर्ष में एक महीना चीनी, और नमक का सेवन न करो। बिना चटनी के रोटी, दाल-भात पर ही जीवन निर्वाह करना सीखो। साग और दाल के लिये नमक और चाय तथा दूध के लिये चीनी दूसरी बार न मांगो।

६. पूजा घर—जप पूजा और ध्यान के लिये एक कोठरी को सदा ताले और कुञ्जी से सुरक्षित रखो।

७. स्वाध्याय—इसी पूजा घर में वेद, उपनिषद, पुराण, ब्रह्मसूत्र, श्रीमद्भगवद्गीता, योग वासिष्ठ रामायण, श्रीमद्भागवत, सहस्र नाम विष्णु, शिव, ललित, लक्ष्मी आदि) आदित्य-हृदय आदि धर्म-ग्रंथ और स्तोत्रों का विचारपूर्ण अध्ययन नित्य-नियम पूर्वक करो।

८. ब्रह्मचर्य—वीर्य रक्षा ही ब्रह्मचर्य है। वीर्य की रक्षा अति सावधानी से करो। वीर्य ईश्वर की विभूति है। वीर्य जीवनी-शक्ति है।

वीर्य गति है। वीर्य परम धन है। वीर्य प्राण है। वीर्य धारण ही जीवन और बिन्दु-पतन ही मरण है। 'मरणं बिन्दु पातेन जीवनं बिन्दु धारणात्।'

९. सत्संग—सत्संगति ही परम गति है। कुसंगति और असत्संगति से बचो। धूम्रपान, सुरापान, और मांसाहार का त्याग करो।

१०. मौन—'मौनं चैवास्मि गुह्यानाम्'—मौन का अभ्यास नित्य दो घण्टे वा सप्ताह में एक दिन नियम पूर्वक अवश्य करो।

११. उपवास—पर्व दिनों पर व्रत का पालन करो और एकादशी को निराहार, दुग्धाहार, फलाहार, सात्विक-युक्ताहार, अल्पाहार वा एकाहार से उपवास करो।

१२ दान—अपनी वित्त के अनुसार, अपनी आय का कुछ भाग, यथा सम्भव रुपये में एक आना दान प्रतिमास या प्रतिदिन नियमित रूप से करो।

१३. सत्य भाषण—सदा सच बोलो। झूठ कभी न बोलो। प्रिय बोलो। अप्रिय सत्य न बोलो। कम बोलो। अधिक न बोलो। व्यर्थ मत बोलो। मिथ्या न बोलो।

१४. अपरिग्रह—अधिक वस्तुओं का संग्रह न करो। चार की जगह तीन या दो वस्त्र ही रखो। सदा सन्तोष रक्खो। सन्तोष ही सुख का कारण है।

१५. अहिंसा—मनसा वाचा कर्मणा कभी किसी को किसी प्रकार

का दुःख न पहुंचाओ। अहिंसा ही परम धर्म है। क्रोध को क्षमा से विरोध को अनुरोध से, घृणा को दया से द्वेष को प्रेम से और को अहिंसा की प्रतिपक्ष भावना से जीतो।

१६. स्वावलम्बन—पराधीन और पर मुखापेक्षी और न बनो। अपने पैरों पर खड़े होना सीखो। नौकरों के भरोसे न स्वावलम्ब सर्व-श्रेष्ठ गुण है।

१७. आत्म-विचार—जो पाप दिन में किया हो उसका रात सोने के पूर्व और जो रात्रि में किया हो उसका प्रातःकाल जागने उचित प्रायश्चित करो। पाश्चात्य विद्वान बेंजामिन फ्रङ्कलिन की आत्म निरीक्षण और दोष-संशोधन का लेख भी 'आध्यात्मिक-चर्य्या' वा दैनन्दिनी के रूप में नियमित रूप से रक्खो।

१८. मृत्यु स्मरण—काल सिर पर सदा तैयार है। यह भूल जाओ। धर्माचरण करो। सदाचार ही धर्म है।

१६. आत्म-चिन्तन—नित्य जागने और सोने के पूर्व 'आ चिन्तन' का अभ्यास नियम पूर्वक करो।

२०. आत्म-समर्पण—अपने आपको पूर्णतया भगवान के ह सौंप दो और अपना सर्वस्व भगवान के चरणों पर न्यौछावर पूर्ण आत्म-समर्पण करो।

श्री स्वामीजी द्वारा रचित योग, भक्ति, ज्ञान सम्बन्धि अति और हृदय स्पर्शी, आत्मज्ञान, बल, बुद्धि एकाग्रता बढ़ाने वाली ग्रन्थों को अवलोकन, शिवानन्दाश्रम और दिव्यजीवन संग के नि यतो आदि जानना चाहें तो पत्र-व्यवहार नीचे लिखे पते पर करें।

दिव्य-जीवन संघ, आनन्द कुटीर, ऋषिकेश। (यू० पी०)